अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदानयज्ञमूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

सौर जेष्ठ १७, शक १८७९
वार्षिक मूल्य ६)

सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार
एक प्रति २ आना

परिवर्तन का तरीका !

अगर आप अपने विरोधी का परिवर्तन करना चाहते हैं, तो आपको उसकी अच्छी-से-अच्छी और गौरवशाली बाजू ही उसके सामने प्रस्तुत करनी चाहिए और उसी ढंग से आपको सर्वत्र काम करना चाहिए। औरों के सामने भी वही बाजू रखनी चाहिए। उसके दोष बार-बार कदापि नहीं सामने लाने चाहिए। —गांधीजी

आश्रम का आधार

श्रम-साधना आश्रम की बुनियाद है, उसके साथ स्वच्छता, सज्जन-संपर्क और चिंतन-ये तीन बातें मैं और जोड़ना चाहता हूँ। श्रमनिष्ठा-युक्त साधना ही इस युग में टिक सकती है, इसमें मुझे तनिक भी संदेह नहीं है। —विनोबा

वर्ष-३, अंक-३६ | 卐 राजघाट, काशी 卐 | शुक्रवार, ७ जून, '५७

ग्रामदान के गर्भ से नागरिक-क्रांति !

(दादा धर्माधिकारी)

यह जमाना सांकेतिक शब्दों का और नारों का है। ग्रामदान महज एक नारा नहीं है, उसमें एक गहरा संकेत है। हम कहाँ जाना चाहते हैं और कैसे जाना चाहते हैं, इसका पूरा संकेत ग्रामदान शब्द में है। किसी समाज के विवेकशील और भावनाशील व्यक्ति धारण रूप से जब एक उद्देश्य को मान्य कर लेते हैं, तो उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधन की योजना करना क्रांति का प्रधान कार्य होता है। इधर कई वर्षों से ग्रामदान के सिवा ऐसी कोई योजना लोगों के सामने नहीं आयी है, जिसके संबंध में इतना अधिक एकमत देश में हुआ हो। आज भारतवर्ष में शायद ही कोई ऐसा क्रांतिप्रिय व्यक्ति या पक्ष होगा, जिसने ग्रामदान के लिए अपनी सहानुभूति प्रगट न की हो। यह कोई छोटी चीज नहीं है। विनोबा अगर इससे अधिक कुछ न कर पाते, तब भी वे लोगों के साधुवाद के पात्र होते।

ग्रामदान का लक्ष्य

ग्रामदान एक ऐसे समाज की रचना को लक्ष्य में रखता है, जिसमें किसी व्यक्ति पर अपनी मेहनत या अपनी प्रतिभा दूसरे के हाथ बेचने की नौबत न आये और न किसी व्यक्ति के लिए अपने पड़ौसी की मेहनत और प्रतिभा के नीलाम में बोली बोलने का मौका ही हो। इस समाज-रचना को आप चाहे जो नाम दे दीजिये, उसका आशय यह होना चाहिए। साफ है कि ऐसी समाज-रचना विकेन्द्रित ही हो सकती है, क्योंकि केंद्रीकरण और राज्यस्वामित्ववाद के कारण साधारण नागरिक के पुरुषार्थ की और स्वत्व की हानि होती है। ऐसी अवस्था में किसी भी प्रकार की लोकसत्ता पनप नहीं सकती, क्योंकि सामान्य नागरिक सदा के लिए नाबालिग का नाबालिग ही रह जाता है !

साधारण नागरिक का प्रतिवेशी धर्म

इसलिए क्रांति की एक ऐसी प्रक्रिया की आवश्यकता है, जिसमें साधारण नागरिक की स्वयंप्रेरणा और सामाजिक वृत्ति का विकास हो। नागरिकों में पारस्परिक सहकार्य की प्रेरणा जागृत करने के लिए एक-दूसरे के प्रति स्वकीयत्व की भावना का भी विकास होना चाहिए। मेरा परिश्रम आपके लिए होगा, आपका परिश्रम मेरे लिए होगा, हम दोनों मेहनत में भी साझेदार होंगे और मेहनत के फल में भी साझेदार होंगे। यह प्रतिवेशी धर्म या पड़ौसियत, ग्रामीकरण की बुनियाद है। समृद्धि में और संकट में एक-दूसरे के जीवन में शामिल होने की वृत्ति ही नागरिकों में स्वयंप्रेरणा और पुरुषार्थ जागृत कर सकती है। यही गांधी का राम-राज्य है, यही विनोबा का ग्राम-राज्य है।

आर्थिक विषमता-निवारण की राह

आर्थिक विषमता के निवारण के लिए तीन ही उपाय हो सकते हैं : १. परिहरण याने जबर्दस्ती से छीनने का उपाय, २. टैक्स लगा कर या कानून बना कर जब्त कर लेने का उपाय और ३. स्वेच्छा से विसर्जन का उपाय।

ग्रामदान साथ तैरने के लिए है !

व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने पर स्पष्ट होगा कि कृषि-प्रधान समाज में छोटे मालिकों की संख्या अधिक होती है, इसलिए मालकियत छीनने का उपाय व्यावहारिक नहीं है। तब रहा कानून का और टैक्स का तरीका। क्या छोटे मालिक अपनी मालकियत का अंत करने के लिए स्वयं कानून बना लेंगे ? अगर बना लेंगे, तो विनोबा नम्रतापूर्वक पूछना चाहेंगे कि छोटा मालिक अगर अपने खिलाफ कानून बनाने की उदारता बतला सकता है, तो भला अपनी इच्छा से मालकियत छोड़ने का सीधा तरीका वह क्यों नहीं अख्तियार कर सकता है ? जवाब एक ही हो सकता है कि कानून सबके लिए होता है और आदमी सबके साथ डूब जाना भी मंजूर कर लेता है। विनोबा कहते हैं, ग्रामदान साथ डूबने का नहीं, साथ तैरने का तरीका है। इसलिए वह और भी अधिक श्रेयस्कर तथा

रामराज और सर्वोदय !

प्रश्न : गांधीजी रामराज का नाम लेते थे, आप सर्वोदय का। क्या दोनों चीजें एक ही हैं ?

विनोबा : दोनों ही शब्द गांधीजी इस्तेमाल करते थे। पर 'सर्वोदय' नया शब्द है, जो आर्थिक और सामाजिक भाव बताता है। 'रामराज' पुराना शब्द है, गांधीजी का नहीं। वह एक काल्पनिक आदर्श का शब्द है। जहाँ समाज आदर्श पर पहुँचता है, वहाँ वह आंतरिक प्रेरणा से चलता है, बाहरी अंकुश की आवश्यकता तब नहीं रहती। यही रामराज है। 'राम' नाम का कोई राजा हो गया और उसके नाम का जो राज है, वही 'रामराज है,' ऐसी कोई बात नहीं है। सबके हृदय में जो अंतर्यामी है, उस 'राम' का वहाँ संकेत है। जब सबके हृदय की परिशुद्धि होगी, तब 'रामराज' प्रकट होगा। रामराज अंतिम आदर्श है, वह आध्यात्मिक राज है।

सर्वोदय याने सबका भला—केवल बहुसंख्या या अल्पसंख्या का ही नहीं। 'सर्वभूत हितेरताः।' सर्वोदय-विचार परिशुद्ध विचार है, प्रतिक्रिया-रूप नहीं। जैसे एलोपैथी में एक रोग दूर करने के लिए दूसरे रोग के कीटाणु शरीर में पैदा किये जाते हैं और परिणामतः एक रोग तो दूर हटता है, पर कुछ दिन के बाद दूसरा रोग पैदा होता है, वैसे ही इन सारे राजनीतिक-आर्थिक प्रयोगों की स्थिति है। परंतु प्रतिक्रिया-रूप सिद्धांत पर चलने से सुख नहीं मिलता। आवश्यकता व्यापक जीवन-सिद्धांत पर चलने की ही है और वही सर्वोदय है, जिसमें सबका भला है। ग्रामदान उसका स्पष्ट और स्थूल रूप है।

(पुदुक्काद, त्रिचुर, १६-५)

www.vinoba.in

व्यावहारिक है। इसलिए अब विनोबा ने सारा जोर भूमिदान, संपत्तिदान और श्रमदान के बदले ग्रामदान पर ही लगाने की हिदायत दी है।

ग्रामदान मंत्र है

इन सारी बातों का तात्पर्य यह है कि आज की परिस्थिति में, जब कि हम साधारण नागरिक की स्वयंप्रेरणा और क्रियाशक्ति को उत्तेजन देकर लोकसत्ता की नींव पक्की करना चाहते हैं और पारस्परिक सहकार्य का तथा सहजीवन के आधार पर उत्पादन और वितरण का संयोजन करना चाहते हैं, ग्रामदान ही एकमात्र व्यावहारिक क्रांतिकारी प्रक्रिया हो सकती है। अतः ग्रामदान एक नारा नहीं, एक मंत्र है, जिसकी सिद्धि के लिए हर स्वदेश-प्रेमी और मानवनिष्ठ नागरिक को अपनी बुद्धि और शक्ति तथा साधन-संपत्ति समर्पित कर देनी चाहिए।*

* प्रेस-सम्मेलन–वक्तव्य, प्रयाग, २७-५-'५७

मनुष्य पूरा और धनी कब बनता है?

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

सब देशों में गरीब ज्यादा और धनी कम हैं। ऐसी बात है, तब किस देश को विशेष गरीब कहा जाय? इसका जवाब यही है कि जिस देश में गरीब के लिए रोजगार करने का उपाय कम है, रास्ता बंद है, वही गरीब! जिस देश में गरीब धनी होने का भरोसा रखता है, उस देश में वह भरोसा ही सबसे बड़ा धन है। हमारे देश में रुपये का अभाव है, यह कहने से बात पूरी नहीं होती। असल बात यह है कि हमारे देश में भरोसे का अभाव है। इसीलिए जब हम पेट की ज्वाला से मरते हैं, तो भाग्य को दोष देते हैं। विधाता या मनुष्य बाहर से दया करे, तभी हमारी रक्षा होगी, यह कह कर धूल में अधमरे होकर पड़े रहते हैं। हमारे अपने हाथ में कोई उपाय है, यह बात सोच ही नहीं सकते।

इसीलिए हमारे देश में सबसे ज्यादा आवश्यकता हाथ में भिक्षा दे देने की नहीं है, बल्कि मन में भरोसा देने की है। मनुष्य खाये बिना मरता है। शिक्षा के अभाव से, अवस्था की गति के कारण हीन होता है, यह कभी भी भाग्य का दोष नहीं है। अनेक रूप से यह अपना ही अपराध है। दुर्दशा के हाथ से उद्धार का कोई पथ ही नहीं है, ऐसी बात मन में लाना मनुष्य का धर्म नहीं है। मनुष्य का धर्म जय करने का धर्म है, हार मानने का धर्म नहीं है। मनुष्य ने जहाँ अपने इस धर्म को भुला दिया है, वहीं उसने अपनी दुर्दशा को हमेशा की सामग्री बना लिया है। मनुष्य दुःख को स्वीकार करता है, दुःख को ही सत्य मान लेने के लिए नहीं, किंतु नयी शक्ति द्वारा नये-नये रास्ते बाहर लाने के लिए। इसी प्रकार मनुष्य की इतनी उन्नति हुई है। यदि किसी देश में यह बात देखी जाय कि वहाँ दारिद्रय में मनुष्य अचल हो पड़ा है और भाग्य का पथ ताक रहा है, तो इससे समझना होगा कि मनुष्य उस देश में मनुष्य के स्तर से नीचे गिर गया है, मनुष्य छोटा हो गया है।

जब वह सामाजिक होता है—

मनुष्य छोटा कहाँ होता है? जहाँ वह दस जनों के साथ अच्छी तरह मिल नहीं सकता। परस्पर मिल कर जो मनुष्य है, वही मनुष्य पूरा मनुष्य है, अकेला मनुष्य टुकड़ा मात्र है। यह बात तो देखी ही है कि बचपन में अकेले पड़ जाने पर भूत का डर लगता था। सच पूछो, तो यह भूत का डर अकेले आदमी की अपनी दुर्बलता का ही डर है। हमारा बारह आना डर इसी प्रकार का भूत का डर है। उसका सबसे पहला कारण यह है कि हम लोग मिलते नहीं, हम लोग बिखरे-बिखरे हुए हैं। अच्छी तरह सोच कर देखें, तो मालूम होगा कि दारिद्रय का भय भी इसी भूत का डर है। यह डर भाग जाता है, यदि हम समाज बना कर खड़े हो सकें। विद्या कहो, रुपया कहो, प्रताप कहो, धर्म कहो, मनुष्य के लिए जो कुछ कीमती और महान् है, वह मनुष्य ने समाज बना कर या मिल कर ही पाया है। बलुआ जमीन में फसल नहीं होती, क्योंकि वह बँधती नहीं; इसलिए उसमें रस जम नहीं पाता, अवकाश में से सब बह जाता है। इसीलिए उस जमीन का दारिद्रय मिटाने के लिए उसमें चिकनी मिट्टी, सड़ी खाद, पत्ते आदि ऐसी चीजें मिलाते हैं, जिससे उसका अंतर कम हो, वह चिपक सके, उसका पिंड हो सके। मनुष्य के लिए भी ठीक यही बात है; उनमें अंतर बहुत होते ही उनकी शक्ति काम की नहीं रहती, शक्ति होने पर भी नहीं के समान हो जाती है।

मनुष्य परस्पर मिल कर कब सच्चा मनुष्य हुआ है, उसकी सबसे पुरानी पहली बात को विचार करके देखें। मनुष्य बोलता है, मनुष्य के भाषा है! जानवरों के भाषा नहीं है। मनुष्य के लिए इस भाषा का फल क्या है? जो मन मुझमें ही बँधा हुआ है, उसी मन को अन्य मन के साथ भाषा के योग से मिला सकते हैं। शब्द और कथन के जोर से मेरा मन दस जनों का मन हो जाता है। दस जनों का मन मेरा हो जाता है। इसीसे मनुष्य अनेकों के साथ मिल कर सोच सकता है। उसकी भावनाएँ बड़ी हो उठती हैं। इन्हीं बड़ी भावनाओं के ऐश्वर्य से मनुष्य के मन की गरीबी मिटती है।

इसके बाद मनुष्य ने जब इसी भाषा को अक्षरों में लिख कर रखना सीखा, तब मनुष्य के साथ मनुष्य के मन का योग और ज्यादा बड़ा हो उठा, क्योंकि मुँह की बात ज्यादा दूर तक नहीं जाती। मुँह की बात धीरे-धीरे लोग भूल जाते हैं; एक से दूसरे मुँह में जाते-जाते बात और दूसरी ही हो जाती है, किन्तु लिखी हुई बात सागर-पर्वत लाँघ जाती है, फिर भी बदलती नहीं। इस प्रकार जितने ज्यादा मनुष्यों के मनों का योग होता है, उनकी भावनाएँ भी उतनी ही बड़ी हो उठती हैं। तब प्रत्येक मनुष्य हजार-हजार मनुष्यों की भावना की सामग्री प्राप्त करता है। इसी से उसका मन धनी होता है।

सिर्फ इतना ही नहीं, अक्षरों में लिखी भाषा से मनुष्य के मन का योग सजीव मनुष्य को भी छोड़ देता है और जो मनुष्य हजार वर्ष पहले जन्मा था, उसके मन के बीच आज के हमारे मन की आड़ नहीं रहती। तभी इतने बड़े मन के योग के कारण मनुष्य ने जो पद्धति बनायी है, उसीको सभ्यता कहते हैं। सभ्यता क्या है? और कुछ नहीं, जिस अवस्था में मनुष्य के लिए इस प्रकार के एक योग का क्षेत्र तैयार होता है, जहाँ प्रत्येक मनुष्य की शक्ति सब मनुष्य को शक्ति देती है और सब मनुष्यों की शक्ति प्रत्येक मनुष्य को शक्तिमान करती है।

आज हमारा देश, जो इस प्रकार विषम गरीब है, उसका प्रधान कारण, हम लोग अलग-अलग होकर अपनी-अपनी विपदा आप वहन करते हैं। भार के बोझ के मारे जब कमर टूट जाती है, तब सिर उठा कर खड़े होने का भी उपाय नहीं रहता। यूरोप में जब पहले पहल अग्निचालित मशीन निकली, तो अनेक लोग, जो हाथ से काम करते थे, बेकार हो गये। मशीन के साथ सिर्फ हाथ से मनुष्य लड़ेगा; तो कैसे? किन्तु यूरोप में मनुष्य निराश होकर हार मानना नहीं जानता। वहाँ एक के लिए दूसरों ने विचार करना सीखा है; वहाँ कहीं भी चिंता का कोई कारण उपस्थित होते ही चिन्ता का बोझ अनेक मिल कर सिर झुका कर उठा लेते हैं। इसीलिए बेकार कारीगरों के लिए मनुष्य विचार करने बैठ गये। बड़ी-बड़ी पूँजी न हो, तो मशीन तो चल नहीं सकती; तब क्या जिसके पास पूँजी नहीं है, वह केवल कारखानों में सस्ती मजूरी करके ही मरेगा और मजूरी न जुटी तो निरुपाय होकर खाये बिना ही सूखता रहेगा? जहाँ सभ्यता का जोर है, प्राण है वहाँ देश का मनुष्यों का कोई भी एक दल उपवास करके मरेगा या दुर्गति में डूब जायगा, यह बात मनुष्य सह्य नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य के साथ मनुष्य के योग द्वारा सभी का भला होगा, यही सभ्यता का प्राण है। इसीलिए यूरोप में जो लोग केवल गरीबों के लिए सोचने लगे, उनकी समझ में आया कि जो अकेले लोग अपना दुख अकेले ही वहन करते हैं उनकी लक्ष्मी-श्री किसी उपाय से भी नहीं बढ़ सकती। अनेक गरीब अपनी सामर्थ्य को एक जगह मिला सकें तो वह मिलन ही पूँजी है। पहले ही कह चुके हैं कि अनेक लोगों की भावना के योग से सभ्य मनुष्य की भावना बड़ी हुई है। इसी तरह अनेक कामों का योग होने से काम अपने आप बड़ा हो सकता है। गरीब को सामर्थ्य देने का उपाय यह जो मिलन का रास्ता है, यूरोप में यही क्रम से चौड़ा होता जा रहा है। मेरा विश्वास है कि यह रास्ता ही पृथ्वी में सबसे बड़ा उपार्जन का रास्ता होगा †

† मूल बंगला से ; अनुवादक : श्री मदनलाल जैन

---

www.vinoba.in

कम्युनिज़म और सर्वोदय !

प्रश्न : क्या कम्युनिज़म और सर्वोदय में केवल साधन का ही फर्क है ? साधन और साध्य में हम चूँकि बहुत फर्क नहीं करते हैं, इसलिए क्या सर्वोदय में साध्य की प्राप्ति के लिए अपनी स्ट्रेटेजी (युक्ति) कुछ बदल सकते हैं ?

कम्युनिज़म के बदलते रूप

विनोबा : कम्युनिज़म भी परिस्थिति के अनुसार बदलता जा रहा है। अगर वैसा वह नहीं बदलेगा, तो वह चलेगा ही नहीं।

जिस तरह से मार्क्स ने कम्युनिज़म का वर्णन किया है, ठीक उसी तरह से तो वह रूस में नहीं चला ! जिस तरह से रूस में चला, ठीक उसी तरह से चीन में भी नहीं चला। और अब हिंदुस्तान में तो एक अद्‌भुत ही घटना हुई है ! केरल प्रदेश में कम्युनिस्टों के हाथ में वैधानिक तरीके से राज्य आया है और उन्होंने जाहिर किया है कि हम संवैधानिक तरीके से ही राज्य चलायेंगे। उन्होंने यह भी जाहिर किया है कि अगर संविधान में कुछ फर्क करने की जरूरत पड़े, तो हम उसके लिए कोशिश करेंगे।

> इस तरह का प्रयत्न करने का हर एक को हक है और जब से संविधान बना, तब से उसमें कुछ फर्क होता भी आया है। जब वे कहते हैं कि बने हुए संविधान के अनुसार या उसमें जो फर्क होगा, उसके अनुसार हम राज्य चलायेंगे, तो हम उनका हृदय से अभिनंदन करते हैं।

अगर वे वैसा नहीं करते और लकीर के फकीर बन जाते, तो कोई चीज बनती ही नहीं। यही तरीका है, जिससे कोई चीज चलायी जाती है। हमें समझना चाहिए कि जैसे गणित-शास्त्र में कोई परिवर्तन नहीं होता है, वैसी हालत समाजशास्त्र या अर्थशास्त्र की नहीं है। उनमें देश, काल और परिस्थिति के अनुसार फर्क पड़ता है और वसा फर्क करने के लिए कम्युनिस्ट राजी हो जायँ, तब तो वे सर्वोदय के बहुत नजदीक आयेंगे।

सर्वोदय का लक्ष्य

सर्वोदय सबका हित चाहता है। दुःखी और गरीब लोगों की तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिए, यह सर्वोदय का नियम ही है। परंतु वैसा करने में दूसरों को कोई तकलीफ देने की जरूरत नहीं है और एक के हित के लिए दूसरे के हित को धक्का पहुँचाने की भी कोई जरूरत नहीं है। सर्वोदय का बुनियादी सिद्धान्त यह है कि एक के हित के विरोध में दूसरे का हित हो नहीं सकता। आजकल 'क्लॅश आफ इंटरेस्ट्स्' की हितविरोध की जो बात चलती है, वह गलत कल्पना है। लोग एक ही गाँव में रहते हैं, एक ही हवा लेते हैं, एक ही पानी पीते हैं, एक ही जमीन की फसल खाते हैं और अडोस-पडोस में ही रहते हैं, तो किसी एक के दुःख-सुख से दूसरा बच नहीं सकता। एक को दुःख हुआ, तो दूसरे को दुख होना लाजमी है, जैसे गाँव में किसी एक लड़के को चेचक हुई, तो दूसरे को उसकी छूत लगती है। किसी एक घर को आग लगी, तो सारा गाँव ही जल जाने की संभावना रहती है। इस तरह जब गाँव के सब लोग एकसाथ रहते हैं, तो एक परिवार बना कर ही रहना होगा, उसीमें सबका भला है। इसलिए जब हम कम्युनिज़म के बारे में सोचते हैं, तो हमें समझना चाहिए कि हर एक देश में उसका रूप अलग-अलग होगा।

(चालकुटी, त्रिचुर, १५-५)

प्रश्न : क्या कम्युनिज़म और सर्वोदय के बीच कोई कॉंप्रमाइज (समझौता) या 'कोआपरेशन' (सहयोग) हो सकेगा ?

सर्वोदय के सागर में सबका स्वागत है

विनोबा : दोनों के बीच समझौता कुछ भी नहीं हो सकेगा, लेकिन सहयोग बहुत हो सकेगा। सर्वोदय अपना विचार नहीं बदलेगा, क्योंकि वह किसी विचार की प्रतिक्रिया नहीं है, वह स्वयं एक जीवन-विचार है। कम्युनिज़म बदलता रहेगा, क्योंकि वह प्रतिक्रिया-रूप है।

> योरप में जो कॅपिटलिस्ट सोसायटी (पूंजीवादी समाजरचना) बनी थी, उसके प्रतिक्रियास्वरूप कम्युनिज़म बना है। जो प्रतिक्रिया-रूप विचार है, वह स्वयमेव पूर्ण जीवन-सिद्धान्त नहीं बन सकता। वह तो हवा के झोंके के अनुसार बदलता जायेगा। आप देखते हैं कि यहाँ पर 'कॉन्स्टिट्यूशनल कम्युनिज़म' (वैधानिक साम्यवाद) शुरू हुआ है, जो कम्युनिज़म का एक 'डेवलपमेंट' (विकास) है। वे ही अपना समझौता करने को राजी होंगे, क्योंकि उनके पास सार्वभौम दृढ़ सिद्धान्त नहीं है।

वह प्रतिक्रिया-रूप है, इसलिए 'कॅपिटलिज़म' (पूंजीवाद) में जो दोष थे, उनकी प्रतिक्रिया उन्होंने बनायी। हिंदुस्तान की परिस्थिति योरप से बहुत भिन्न है। यहाँ धर्मभेद, जातिभेद, भाषाभेद आदि बहुत हैं। समाज कृषिप्रधान है। बहुसंख्या कृषकों की है, मजदूरों की नहीं है। योरप में उन्होंने सारा दारोमदार मजदूरों पर रखा था, वैसा वे यहाँ नहीं रख सकते हैं। यहाँ पर मुख्य आधार किसानों पर रखना होगा और किसान-मजदूरों को एक मानना होगा। इसके अलावा हिंदुस्तान के जमीन का एक बड़ा मसला है। यहाँ, और खासकर केरल में जमीन बहुत कम है और जनसंख्या ज्यादा। योरप के समान यहाँ पूँजीवाद विकसित नहीं हुआ है।

ऐसी हालत में कम्युनिज़म ही अपना समझौता करता जायेगा। इसलिए सर्वोदय उसके साथ सहयोग (कोआपरेशन) करने को तयार होगा : जितना वह अपना रूप बदलेगा और सर्वोदय के नजदीक आयेगा, उतना सर्वोदय उसके साथ सहयोग के लिए तैयार होगा।

समझौते का अर्थ यह है कि आप कुछ छोड़ें, हम कुछ छोड़ते हैं। इस तरह यहाँ नहीं होगा। बल्कि आप कुछ छोड़ें, हम कुछ नहीं छोड़ेंगे, तो फिर आपका और हमारा सहयोग होगा। इस तरह हमारी स्थिति कायम रहेगी और उनकी स्थिति बदलती रहेगी।

इसीलिए हमने कहा था कि धीरे-धीरे कम्युनिज़म की नदी सर्वोदय के समुद्र में मिल जायेगी। दूसरी भी नदियाँ यहाँ आकर मिल जायेंगी।

सोशलिज्म (समाजवाद) और 'वेलफेअर स्टेट' (कल्याण राज्य) भी आखिर अपने को समाप्त करके सर्वोदय में डूबेंगे, ऐसी व्यापक वस्तु सर्वोदय है। क्या समुद्र किसी नदी के साथ समझौता करता है ? पर वह सहयोग के लिए बिलकुल खुला है। उसे उसमें करना भी क्या पड़ता है ? तुम आओ और हममें डूब जाओ ! इसलिए सर्वोदय को उसमें कुछ-तकलीफ ही नहीं है !

(चालकुटी, त्रिचुर, १५-५)

जापान के लिए संदेश !

भाई इमाईजी ने दो साल से हिंदुस्तान में काम किया। हमारी भूदान-यात्रा में कई महीने हमारे साथ रहे। बड़े प्रेम से उन्होंने हमको जापानी भाषा भी सिखायी। वे तो एक विश्वमानव हैं। मनुष्य मात्रका भला चाहते हैं। उनके स्नेह-संबंध से हमारा हृदय जपान के साथ जुड़ गया है। अब वे शांतिकार्य के लिए जपान लौटना चाहते हैं और जपान के लोगों के लिए मुझसे संदेश की अपेक्षा करते हैं। इसलिए चंद शब्द लिख रहा हूं :

आजकल दुनिया की दशा डावाँडोल है। सर्वत्र भय छाया हुआ है। बड़े देश भी डरते हैं, छोटे देश भी डरते हैं। जो शस्त्र-सज्जित हैं, वे भी डरते हैं, जिनके पास शस्त्रबल कम है, वे भी डरते हैं। देश-देश के बीच वैर-भाव बढ़ रहा है। बड़े-बड़े राष्ट्र के गुट बने हुए हैं।

इसका क्या उपाय हो सकता है ? क्या इसके लिए हर देश को किसी-न-किसी गुट में शामिल होना चाहिए और शस्त्रास्त्र में मनुष्य की होड़ लगानी चाहिए ? अब शस्त्रास्त्र मनुष्य के तावे में नहीं रहे। मनुष्य शस्त्रास्त्र के तावे में जा चुका है। ऐसी हालत में वे ही देश, समाज और जन टिकेंगे, जो अपना दिमाग शान्त और तटस्थ रख सकेंगे, अपने जीवन को, समाज को और देश को अहिंसा के संरक्षण में रखेंगे, गाँव-गाँव को परिवार समझ कर बरतेंगे, न किसीको दबायेंगे, न किसीसे दबेंगे, स्वावलम्बन और सहयोग से जीवन संपन्न बनायेंगे तथा केवल भौतिक सुख नहीं, आंतरिक सुख का भी खयाल रखेंगे।

इस दिशा में भूदान-यज्ञ के जरिये एक अल्प-सा प्रयत्न भारत में किया जा रहा है। इसके पहले अहिंसा का प्रयोग स्वराज्य-प्राप्ति के लिए किया था, उसीका यह विस्तार है। मैं आशा करता हूँ, जापान के लोगों को आत्मशक्ति का भान होगा और वे अहिंसा के आधार पर सर्वोदय-समाज बनाने में अग्रसर होंगे। मैं इमाईभाई के जरिये जापान के सब सज्जनों को जापान में शांति-शक्ति संघटित करने के महान् प्रयत्न में यश चाहता हूँ।

२-५-'५७ —विनोबा के प्रणाम

www.vinoba.in

आल्वारों और आचार्यों की सर्वोदय-दृष्टि

(अरेयर श्रीनिवास अयंगार, मेलुकोटे)

तमिलनाड़ के आळ्वार संत प्रेम-प्रधान जीवन के लिए प्रख्यात हैं और आचार्य ज्ञानप्रधान जीवन के लिए एवं प्रेम और ज्ञान, ये दो ही तो सर्वोदय के मूल तत्त्व हैं। आळ्वार और आचार्य, इन दोनों चीजों से ओतप्रोत थे। उनका साधन भी शुद्ध था। साधन "सिद्धोपाय भूत भगवान् ही"—याने भगवान् का जो सत्य, प्रेम, दया, वात्सल्यादि कल्याण-गुण ही उनका साधन भी। इष्टसिद्धि के लिए वे दुष्ट गुणों की उपासना नहीं करते थे। उनका ध्येय था—ब्रह्मसाक्षात्कार, व्यापक सद्भावना और सतत सेवा। कुछ भी न करने वाला भक्त नहीं होता। "न अकिंचित् कुर्वतः शेषत्वम्।" हमेशा "किं करोमि? किं करोमि"–'क्या करूँ? क्या करूँ?' ऐसा कैंकर्य ही उनका परम लक्ष्य था। उनकी एक विशेषता और थी–उनकी सामूहिक शुभेच्छा। पहले परहित, बाद में स्वहित, ऐसी परम पावन दृष्टि थी आचार्यों की। सामूहिक सेवा, सामूहिक प्रार्थना के लिए ही आळ्वार सदा उत्कंठित रहते थे। जो कुछ प्राप्त है, उसके समवितरण की शुभ भावना उनमें दीख पड़ती थी।

संविभाग

पोयळेयार, पूदत्तार, पेयार; इन तीन आळ्वारों की कथा प्रसिद्ध ही है। बाढ़ का समय था। केवल एक व्यक्ति के लिए सोने का स्थान था। वहाँ एक आळ्वार आकर सोये। कुछ देर के बाद घूमते-घूमते दूसरा आळ्वार वहाँ आया! उससे पूछा, "भीतर स्थान है क्या?" भीतर वाले ने कहा, "यहाँ एक आदमी सो सकता है, दो आदमी बैठ सकते हैं, आप भी आइये।"—"ओरुवर पडुक्कलां, इरुवर इरुक्कलां" कुछ देर बाद तीसरा आळ्वार भी आया। भीतरवालों ने कहा, "यहाँ दो आदमी बैठ सकते हैं, तीन आदमी खड़े रह सकते हैं। आप भी आइये।" खड़े रह कर ही तीनों ने समय काटा। कहते हैं कि तभी उन्हें भगवान् का दर्शन हुआ। ऐसे संविभाग से ही तो भगवान् का दर्शन होता है!

अस्ति-नास्ति का समन्वय

नम्माळ्वार ने आत्मा को विश्वव्यापी माना। संसार को कष्ट में देख कर वे स्वयं भी दुःखी हुए। "ऊरुंनाडु मुलहदुं तन्नेप्पोल् अवनुडेय"–जनता को अपने से पृथक् मानने की संकुचित भावना आळ्वार की नहीं थी।

नम्माळ्वार के कथन में आस्तिक और नास्तिक का समन्वय है। वे कहते हैं—"मैंने भगवान् को 'अस्ति' कह कर सिद्ध किया तुमने 'नास्ति' कह कर सिद्ध किया। मेरा 'अस्ति' और तुम्हारा 'नास्ति', दोनों ही भगवान् के नाम हैं। दोनों भगवान् के ही रूप हैं!"

परिश्रम

नम्माळ्वार ने श्रम-प्रतिष्ठा पर बड़ा जोर दिया है। उन्होंने कहा कि "शोन्नाल् विरोधमिदु, आहिलुं शोल्लुवन् केण्मिनो।"

...कृपा करके सरकार के स्तुतिपाठक न बनो। मैं यह बात केवल तमिळनाड़ के लिए ही नहीं, केवल भारत के लिए ही नहीं, सारे विश्व के मानवों के लिए कहता हूँ। सब लोग शरीरश्रम करके पसीने की कमाई से ही गुजर करें।

समाज-निष्ठा

एक बार विनोबाजी ने कहा, "मैं जब भगवान् का स्मरण करता हूँ, तो गांधीजी की याद आती है और जब गांधीजी का स्मरण करता हूँ, तो भगवान् की ही याद हो आती है।" यह बात नम्माळ्वार की "भगवत्-निष्ठा" की व्याख्या ही मालूम होती है। वे कहते हैं—सबमें नारायण बसता है, नारायण में सब बसते हैं। इसलिए भगवद्भक्ति है–भगवद्संबंधी सभी वस्तुओं में भक्ति करना। प्यार से समाज-सेवा न करने से भगवद्-सेवा पूर्ण नहीं होती। संसार में जो कुछ दीख पड़ता है और नहीं दीख पड़ता है, दोनों भगवान् की ही दिव्य मूर्ति है। सारा विश्व ही भगवन्-मंदिर है।

नम्माळ्वार सज्जन-दुर्जन-भेद नहीं करते थे। उनकी दृष्टि में 'कलियुग' ही नहीं था। वे कहते थे कि "दंडधर यम देव का भी क्या काम है?" जब यम की ही आवश्यकता नहीं, तब सरकार की क्या आवश्यकता है? ऐसे आळ्वार का समाज शासनमुक्त समाज ही था।

नम्माळ्वार भगवान् को अनेक नाम से बुलाते हैं–"मुनिये, नान्मुहने, मुक्कण्णप्पा!"–'नारायण, चतुर्मुख, त्रिनेत्र!' विष्णु, ब्रह्म, शिव शब्द से बुलाते हैं। एक ही परम देवता है। उसका नाम सहस्राधिक है। ये सभी नाम एक ही भगवान् के भिन्न-भिन्न कल्याण-गुणों का बोध कराते हैं।

'सर्वं समाप्नोपि ततोऽसि सर्वः' "सर्वं खल्विदं ब्रह्म!"

नम्माळ्वार रूढ़ वैष्णव मात्र नहीं हैं, वास्तव में वे मुसलमान भी हैं, ईसाई भी हैं, शैव भी हैं। सारा विश्व ही वे हैं।

पुराने मूल्यों में क्रांति

तमिलनाड़ के आचार्यों में रामानुज एक सुन्दर 'मुक्ता' है। गुरुजी ने रामानुज से 'शपथ' लिवायी कि मंत्रार्थ रहस्य है, किसीको मत बताना! पर रामानुज ने पुराने मूल्य का नाश कर आध्यात्मिक जीवन में सच्ची क्रांति की परंपरा से, जो रहस्य था, उसे सर्वसाधारण के लिए सुगम कर दिया। गुरुजी ने रामानुज को बुला कर पूछा–"तूने यह क्या किया?"

रामानुज बोले, "मैंने गुरुवाक्य का उल्लंघन अवश्य किया है। आप चाहे जो दंड दे सकते हैं।"

"आचार्यवाक्योल्लंघन के लिए 'नरक' मिलेगा।"

"बोलने वाले को तो नरक मिलेगा, पर क्या सुनने वालों को कुछ भी नहीं मिलेगा?"

"सुनने वालों का कोई दोष नहीं। सारा दोष तुम्हारा ही है।"

तब रामानुज ने प्रसन्न होकर कहा, "मुझे नरक भी मिले, तो परवाह नहीं। सुनने वालों को मोक्ष मिले, तो मैं धन्य हूँ!"

इस बात ने गुरुजी के हृदय को स्पर्श किया। वे कहने लगे, "रामानुज, तू मेरा देव है–'एम् पेरुमानार'–मुझे दया का पाठ सिखा। समाज का दुःख देख कर अब तक चुप बैठे थे। तेरी ही कृपा से अब समाज का उद्धार होगा। सारा समाज मोक्षाभिमुख होगा।

सर्वोदय पर जोर

'पहले सबका भला, पीछे अपना भला', यह सर्वोदय-दृष्टि रामानुज की आत्मा में हमेशा जाग्रत थी। श्री देवी को आचार्य ने 'अखिल जगन्मातरं-अस्मन्मातरं' कहा।—पहले तू अखिल जगत् की माता, बाद में मेरी। सब बच्चों का पालन-पोषण करके ही मेरे पास आओ। भगवान् से प्रार्थना की कि भगवन् तू अखिल जगत् पर पहले अपना स्वामित्व चला, केवल मुझ पर तेरा छोटा स्वामित्व मुझे सहन नहीं है।

ग्रामजीवन की पवित्रता

'यदुगिरी' अथवा 'मेलुकोटे' मैसूर के उत्तर में तीस मील पर छोटा-सा पुण्यक्षेत्र है। वह रामानुज का प्रेमकेंद्र है। आसपास प्रकृति की रमणीयता आगंतुकों के मन में उल्लास भरती है। रामानुज ने सन् १०९८ में ही अस्पृश्यों को 'तिरुकुलत्तार' (श्रीमत् कुल) जैसे नाम रख कर भगवान् के दर्शन की सुविधा दी। अतः यह गाँव 'पतितपावन क्षेत्र' कहलाता है। रामानुज ने इस गाँव के रूप में जनता को उपदेश दिया—"कुटीं कृत्वा तस्मिन् यदुगिरितटे नित्यवसतिः" छोटे-से गाँव को ही चुनो। कुटीर में ही बसो। बड़े-बड़े मकान की आवश्यकता नहीं। कुटीर भी अपने परिश्रम से ही बनाओ, मजदूरी से नहीं। मालिक-मजदूर की सृष्टि, सृष्टि के विरुद्ध है। अपने शरीर-श्रम से ही कुटीर बनाना चाहिए–कुटीं कृत्वा, न तु कारयित्वा!

सर्वस्व-दान से निर्भयता

'कूर' गाँव का जमींदार, उनका शिष्य सारा छोड़ कर सर्वस्व-दान करके श्रीरंग में 'नारायणाश्रय' लेकर बसा। सहकुटुंब पदयात्रा करते समय उसकी पत्नी डरते हुए पूछती है, "इस जंगल में कोई चोर तो नहीं है?" कुरेश हँस कर कहता है, "मडिलेइरंदाल वळीले भयं।"–"पास में यदि कुछ है, तो बगल में डर भी है।" पत्नी कहती है, "आपके जलपान के लिए यह एक ही सोने का बर्तन मैंने अपने पास रखा है।" कुरेश ने उसे उठाकर दूर फेंक दिया। "अब कोई डर नहीं," कह कर उसने पत्नी का समाधान किया। आंशिक दान से भय है, सर्वस्व-दान से 'अभय' प्राप्त होता है।

अर्थशुचित्व

उचित न्यायपूर्ण रीति से वित्त का अर्जन, 'अर्थशुचित्व' मनुष्य-जीवन में अनिवार्य नियम है, यह आचार्य का अभिप्राय है। 'यः अर्थशुचिः स शुचिः,' ऐसा न्यायमार्ग से उपार्जित वित्त का सत्पात्र में तुम्हीं खुद विनियोग करो–'दानं दातृवशं प्रोक्तम्।' आज भी रामानुज के आदेशानुसार मंदिरों में सालों से 'नेमिसेवा' चल रही है। 'नेमिसेवा' का मूल तत्त्व संपत्तिदान में आ रहा है। प्रतिवर्ष अपनी आय का

www.vinoba.in

एक हिस्सा भगवदर्पण करना, भागवत्-गोष्ठी में स्वयं विनियोग करना 'नेमिसेवा' है। संपत्तिदानियों को अन्याय से धन-उपार्जन के लिए हम प्रोत्साहित न करें। संपत्तिदान शोषकों का दान न हो। संपत्तिदान में यह संकल्प निहित है कि 'मैं धीरे-धीरे शोषक जीवन छोड़ रहा हूँ। बिना शरीरश्रम के शोषक होकर मत कमाओ। शरीरश्रम से पोषक होकर कमाओ।

विविध भाषा-प्रेम

तमिलनाड़ को आचार्यों की एक महत्त्वपूर्ण देन है—संस्कृत तथा तमिल, दोनों भाषाओं में समान परिश्रम और दोनों का समान आदर। उसी कारण से वे 'उभय वेदान्त प्रवर्तक' हो गये। आळ्वारों की श्रीसूक्ति ही तमिल वेदान्त है। उपनिषदों में संस्कृत वेदान्त है। "पुराने आचार्यों ने उत्तर भारतीय जनता को तमिल भाषा का रसास्वाद कराया। आप अब हिंदी में तमिल रस को पिलाइए," विनोबाजी की यह उक्ति सही है।

शंकर-रामानुज समन्वय

मई माह में शंकरजयन्ती मनायी गयी। तभी रामानुज का तिरुनक्षत्र भी उदय होता है! क्या ही अच्छा हो कि इससे शंकर-रामानुज का अभिन्नता का संदेश सबको प्राप्त हो। शंकराचार्य ने 'ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है,' ऐसा अद्वैत माना। "सब एक ही ब्रह्मके अन्तर्गत हैं।"—ऐसी विशिष्टता रामानुजाचार्य ने मानी। एक ब्रह्म में सबके अन्तर्भाव से, ब्रह्म के अतिरिक्त कौन है? सर्वोदय भी एक-रस समाज चाहता है—अद्वैत समाज! उसमें सबकी सम्मति है। विचार में 'विशिष्टता', आचार में अद्वैत। ऐसे समन्वय के लिए ही दोनों आचार्यों का एक ही दिन जन्म हुआ।

आळ्वारों और आचार्यों का संविभाग में प्रेम, विचार-समन्वय, शरीर-श्रम की प्रतिष्ठा, समाज-सेवा की दृष्टि, शासन-निरपेक्षता, एकदेवोपासना, विश्वजनानुमोदनीय वाणी, परहित में ही स्वहित, पतितपावन दृष्टि, ग्रामनिवास में ही आनन्द, सर्वस्वदान, संपत्तिदान, विविध भाषाओं का अध्ययन; ये सभी बातें सर्वोदय को मान्य हैं। हम इन सब बातों का और अधिक विकास करें।

कानून बनाम समाज-परिवर्तन

प्रश्न : क्या कानून की व्यवस्था बदले बिना समाज-परिवर्तन किया जायेगा?

विनोबा : लोगों का दिमाग कैसा उलटा सोचता है! उन्हें लगता है कि कानून बदलेगा, तब समाज बदलेगा, कानून में जनसमाज की रचना बदलने की ताकत है, आज तक कितने ही राजा-महाराजा हो चुके! उनकी कितनी सत्ताएँ चलीं? उस-उस जमाने में उन्होंने कानून भी बनाये, पर उन कानूनों का आज कोई असर नहीं है और जनता का काम अपने विचार से चल रहा है। आप अपने ही जीवन में देखिये कि किन-किन कानूनों से आपका जीवन बना है? क्या माताएँ अपने बच्चों को दूध पिलाती हैं, तो क्या किसी कानून के आधार से? दूध न पिलाने पर सजा होगी और पिलाने पर 'पद्म विभूषण' जैसा कोई इनाम मिलेगा, इस तरह का कोई इन्तजाम किये बिना ही माताएँ बच्चों को दूध पिला रही हैं। किस सरकार के कानून के कारण हिंदुस्तान के बहुत से लोग बिना स्नान किये खाना नहीं खाते हैं? जीवन की कितनी मुख्य चीजें कानून से बनी हैं? बहुत सारे लोग चोरी नहीं करते हैं, तो क्या कानून के ही कारण नहीं करते हैं? यह सही है कि चोरी करने से सजा होती है, पर लोग चोरी नहीं करते हैं, इसका कारण यह है कि लोगों के हृदय में धर्म-भावना पैठी हुई है। वे समझते हैं कि चोरी करना उचित नहीं है।

समाज की विवेक शक्ति कैसी बनती है?

समाज की एक 'कॉन्शिअन्स'-विवेकशक्ति बनी है, जिसके कारण समुदाय ठीक चलता है। जो चीज समाज की विवेकशक्ति में आ जाती है, उसका कानून बनता है। यह समाज की विवेकशक्ति हजारों बरसों के अनुभव से बनी है।

एक जमाना था, जब लोग अनेक शादियाँ करते थे। किसीकी चार पत्नियाँ होती थीं! तो किसीकी अष्टनायिकाएँ! जितनी ज्यादा पत्नियाँ, उतना वह श्रेष्ठ राजा! पर क्या इस जमाने में एक से ज्यादा पत्नियाँ रखने में कोई प्रतिष्ठा रह गयी है? लोग रोज रामायण पढ़ते हैं, जिसमें जिक्र आता है कि दशरथ की तीन रानियाँ थीं! परंतु वह पढ़ कर किसीको दशरथ के जैसा बनने की इच्छा नहीं होती है। लोग समझते हैं कि वह तो पुराने जमाने की बात हो गयी, वह अच्छी चीज नहीं है, क्योंकि विवेकशक्ति बदल गयी है! इस तरह से समाज की नीति-भावना अनुभव से बदली है। सर्वोदय यह करता है कि समाज की विवेकशक्ति बनाता है, उसका नीतिधर्म बनाना है। आज कानून से चोरी को पाप, गुनाह माना जाता है, परंतु संग्रह को गुनाह नहीं माना जाता है, बल्कि उसे व्यक्तिगत मालकियत मान कर बैठे हैं। सर्वोदय कहता है कि जैसे चोरी गुनाह है, वैसे संग्रह भी अपराध है।

सर्वोदय की अपार शक्ति

एक व्यक्ति ज्यादा संग्रह करता है, इसीलिए दूसरे को चोरी की प्रेरणा होती है। अभी कानून से संग्रह को गुनाह नहीं माना गया है, पर आगे चल कर वैसा भी कानून बनेगा, क्योंकि समाज की विवेकशक्ति में धीरे-धीरे बदल हो रहा है। विवेकशक्ति बनाने का काम सर्वोदय कर रहा है। १० साल पहले किसीसे पूछा जाता कि आपके पास कितनी जमीन है, तो ५० एकड़ होने पर भी वह २०० बताता था, क्योंकि उस वक्त ज्यादा जमीन रखना प्रतिष्ठा का लक्षण था। अब किसीसे वही सवाल पूछा जाय, तो पास में २०० एकड़ होने पर भी वह ५० बतायेगा, क्योंकि "मेरे पास ज्यादा जमीन है, ज्यादा इस्टेट् है," यह कहने में अब इज्जत नहीं रही है। उसकी यह झूटी इज्जत खत्म करने का काम ही सर्वोदय करता है। जब यह इज्जत खत्म होगी, तब उसके बाद कानून बनेगा, इसलिए सर्वोदय में, कानून में परिवर्तन लाने की जबर्दस्त शक्ति है।

(चालकुटी, त्रिचूर, १५-५-'५७)

धरती के बेटे जाग उठे हैं!

(प्रभु मङ्गल)

महापुण्यसलिला धर्म-चक्र-प्रवर्तन-वाहिनी ग्रामदान-भगीरथी आज गाँव-गाँव और नगर-नगर से होकर बह रही है। रे, सुप्त-मानव! पर, तेरी निद्रा नहीं टूटी!!

जर्जर-समाज के प्राचीन मूल्यों में समूल परिवर्तन द्वारा आज नये समाज के नये मूल्यों की प्रतिष्ठापना होने जा रही है। रे, सुप्त-मानव! पर, तेरी निद्रा अभी नहीं टूटी!!

धरती के लालों को धरती के गीत सुनाती; धरती मा को मुक्त करो रे—
जो जोतेगा, उसके पास ज़मीन!
जो दीनहीन हैं, भूमिहीन हैं, उनके पास ज़मीन!!

सृष्टि के कण-कण में नवचेतना, नयी जागृति लाती चिरन्तन प्रेम की मधुर-स्वर-लहरी लहर-लहर लहरा रही है। रे, सुप्त-मानव! पर, तेरी निद्रा अभी-भी नहीं टूटी!!

तुमने नहीं सुना! आज तुम्हारे दुआरे खड़ा होकर युगधर्म पुकार उठा है—
भूदानयज्ञ युग की वाणी है!
ग्रामदान धर्म-विचार है!
ग्रामोद्योग का विस्तार धर्म-विचार है!
उपज बढ़ाना धर्म-विचार है!
धर्म वह है, जिससे समाज में प्रेम बढ़े।
धर्म वह है, जिससे समाज निर्वैर बने।
सर्वोदय-धर्म की बुनियाद है—अहिंसा।
सर्वोदय-धर्म का लक्ष्य है—प्राणिमात्र का विकास।
सर्वोदय-धर्म का मार्ग है—श्रम, त्याग और सेवा।
सुनो! सुनो!! यह किसकी वाणी, किसका उद्घोष? त्रिविध-क्रान्ति—
हृदय-परिवर्तन! जीवन-परिवर्तन!! समाज-परिवर्तन!!!
जो बहन नहीं उठी है, उसको—
जो भाई नहीं उठा है, उसको—
आज मनुजता पुकार रही है।
सैंत रखा है, जो कुछ तुमने, उसे समाज को दे डालो! दे डालो!!
नयी सृष्टि के लिए, नये सृजन के बीज बनो रे!
शासनमुक्त-समाज गढ़ो रे!
अब ग्रामराज होगा!
अब रामराज होगा!!
देखो, आया नवप्रभात! गूँजा जनजीवन में नवजीवन का नया-राग!!
रे, सुप्त-मानव! जागरण की मंगल-बेला में भी तुम सोये पड़े हो!!!
यह कैसी तन्द्रा! धरती के बेटे तो जाग उठे हैं!!

---

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ

७ जून सन् १९५७

स्टेट् अहींसा की राह पर कैसे जाये ?

(वीनोबा)

आज कार्यकर्ता परतंत्र है। लोग भी परतंत्र है। लोग और कार्यकर्ता सरकार पर भार रखते है, अपनी शक्ती को महसूस नहीं करते। अैसे वे गुलाम बने हुअे है। कार्यकर्ता सोचते है, राजनैती से ही हमारा भला होने वाला है। अीसलीअे सबकी कोशीश रहती है की अपने हाथ में सत्ता कैसे आय। आपस-आपस में होड़ चली है। अीसी तरह रचनात्मक कार्यकर्ताओं की भी ताकत नहीं बनती है। कीसी-न-कीसी की मदद की आशा वे रखते है। सर्वोदय के कार्य में तो अपनी ही हीम्मत चाहीअे। कार्यकर्ता जनशक्ती को जगायेंगे, तो राजनैती के बदले में लोकनैती वे स्थापन करेंगे, लोकनैती का असर राजसत्ता पर पड़ेगा, अैसा वे प्रयत्न करेंगे। रामचंद्र की सत्ता तो चलती थी, वे राज भी चलाते थे, परंतु अुन पर सही सत्ता वशीष्ठ की ही होती थी, जीनका की 'अीलेक्शन' नहीं होता था !!

जहां स्वतंत्र वीचारों का प्रभाव रहता है, वहां स्टेट् अहींसा की राह पर चल सकती है। आज क्या हालत है ? राज कांग्रेस पार्टी का है, लेकीन अुस पर कांग्रेसवालों की सत्ता नहीं चल सकती! आपस-आपस में चर्चा भी कर लेते है, लेकीन छुले आम टीका करने की या बदल करवाने की तो हीम्मत नहीं होती। वे सत्ता वाले जो नीती तय करेंगे, वह कानून हो जायेगा और अुसका बचाव फीर सबको करना पड़ता है। गलत काम हुआ, तो भी वे बचाव करेंगे, टीका नहीं करेंगे, क्योंकी पार्टी की 'डीसीप्लीन' (नीयमबद्धता) है। फ्री क्रीटीसीज़्म-छुले समालोचना अपनी पार्टी के राज पर वे नहीं कर सकते। अुधर दूसरी पार्टी वाले, कीसी भी पार्टी का राज हो, तो अुस पर टीका करेंगे, अुनकी गलती ही ढूंढते रहेंगे। अैसी हालत में सरकार पर अंकुश क्या रहा ? अीसलीअे अैसा अेक समाज चाहीअे, जो कीसी पार्टी में शामील नहीं है, जो सत्ता की अभीलाषा नहीं रखता, जो केवल सेवापरायण है, जो स्वतंत्र जनशक्ती नीर्माण करता है और जो नीरपेक्ष भाव से काम करते रहता है। अैसा समाज हो, तो सरकार पर अंकुश रहेगा। कहते है, लोकतंत्र में वीरोधी पक्ष रहे, तो सरकार पर नीयंत्रण रहता है और अुसका 'करेक्शन' होता है। लेकीन 'करेक्शन' 'सत्ताभीलाषी' और 'सत्ताकांक्षीयों' से भीन्न तटस्थ समाज के द्वारा ही हो सकता है।

(तरूर, पालघाट, २३-५-'५७)

सर्वोदय की दृष्टि से :

'मेहनत इंसान की, दौलत भगवान् की'

अ. भा. खादी-ग्रामोद्योग-कार्यकर्ता-प्रशिक्षण केन्द्र, खुर्जा (बुलन्दशहर) के आचार्य श्री राधेश्यामजी तिवारी लिखते हैं :

"आपका एक भाषण २९ मार्च '५७ के "भूदान-यज्ञ" में पढ़ने को मिला। उसमें आपने बताया है कि पूँजीवादी कहता है—'मेहनत मजदूर की और दौलत मालिक की।' समाजवाद कहता है—'जिसकी मेहनत उसकी दौलत।' सर्वोदय कहता है—'मेहनत इंसान की, दौलत भगवान् की।' जहाँ तक पूँजीवादी सूत्र की बात है, यह तो सामाजिक दृष्टि से उचित नहीं है, यह आज का प्रत्येक समाजनिष्ठ, बुद्धिनिष्ठ आदमी स्वीकार करेगा। पर 'मेहनत इंसान की, दौलत भगवान् (यानी समाज) की,' इस दृष्टि से श्रम को प्रोत्साहन न मिल कर आलस्य को प्रोत्साहन मिलेगा। जिस प्रकार रूस में 'जितनी ताकत, उतना काम और जितनी जरूरत, उतना दाम' तथा एकत्र परिवार के सूत्र को बदलना पड़ा, क्योंकि आज मनुष्य का स्वभाव ही ज्वाइंट फैमिली (एकत्र परिवार) में कम काम करने का हो गया है और यह इसलिए कि परिवार में उसे हिस्से के अनुसार भोजनादि मिल जाता है। तो, सारे समाज या राष्ट्र को परिवार मानने पर सब लोग सेवार्थ या परार्थ कार्य अपनी पूरी शक्ति लगा कर कैसे करेंगे ? बिना किसी बंधन या निजी मालकियत की भावना से श्रम-निष्ठ समाज की स्थापना कहाँ तक और कैसे संभव है ? सम-विभाजन के बाद भी उत्पादन बढ़ाने के लिए सम्भवतः इतना तो रखना ही पड़ेगा कि 'प्रत्यक्ष मेहनत जिसकी, दौलत उसकी,' क्योंकि भाई-भाई में भी इसी कारण बँटवारा हो जाता है कि फलाँ काम अधिक करता है और फलाँ कम। तो 'मेहनत इंसान की, दौलत समाज की (भगवान्)' वाले सूत्र से राग-द्वेष-रहित समाज की स्थापना कैसे सम्भव है ?"

उत्तर : श्री राधेश्यामजी तिवारी ने जो सवाल उठाया है, वह वास्तविक और बुनियादी है। परंतु यदि उस सवाल के पीछे यह मंतव्य छिपा हुआ है कि किसी-न-किसी रूप में लाभ के आश्वासन के बिना काम करने की प्रेरणा हो ही नहीं सकती, तब तो मर्यादित पूँजीवाद और सुनियंत्रित संपत्तिवाद को ही क्रांति का लक्ष्य मान लेना होगा। पूँजीवादी समाज-व्यवस्था में औद्योगिक क्षेत्र में राज्य-स्वामित्व के अधीन एक कक्ष (सेक्टर) रहता ही है। 'जिसकी मेहनत, उसकी दौलत' का नियम मान लेने से अनवस्था-प्रसंग प्राप्त होने का डर है; क्योंकि उसका क्रमप्राप्त परिणाम यह होगा कि जो जितनी मेहनत करेगा, उसको उतना प्रतिमूल्य मिलना चाहिए। इसके साथ-साथ यह भी मानना पड़ेगा कि जो जिस प्रकार की मेहनत करेगा, उसके अनुरूप प्रतिमूल्य उसे मिलना चाहिए। कुशल तथा कलात्मक उद्योगों के लिए विशेष वेतन देना होगा। इन सबका परिणाम उपभोग्य वस्तुओं के विषम विभाजन में होगा। व्यक्तिगत सुख-वैभव की इस विषमता का समर्थन हम केवल इसी आधार पर कर सकेंगे कि उपभोग की विषमता तो है, लेकिन शोषण और वर्गभेद के लिए अवसर नहीं है।

परंतु सभी क्रांतिकारियों ने—चाहे वे मार्क्सवादी हों या तदितर हों—अपनी समाज-रचना का यह एक अनिवार्य सूत्र माना है कि काम की प्रेरणा लाभ की नहीं, अपितु सामाजिकता की होनी चाहिए। आर्थिक प्रेरणा की जगह सामाजिक प्रेरणा का विकास करना सारे क्रांतिकारी संयोजन की आधारशिला होनी चाहिए। इस दृष्टि से एक नियत अवधि के लिए काम के मुताबिक दाम अर्थात् 'जैसा और जितना काम, वैसे और उतने दाम' का नियम स्वीकार कर लिया जाये, तो भी कोशिश यह होनी चाहिए कि वह कालावधि अल्प-से-अल्प हो। इससे अनुरूप संस्कारों का निर्माण करने का साधन शालेय शिक्षण और लोकशिक्षण है। शिक्षण, संयोजन और उत्पादन की प्रक्रियाओं में जब संपूर्ण सामंजस्य होगा, तब कौटुंबिक और सामाजिक क्षेत्रों में कामचोर और आलसी लोगों की संख्या न्यूनतम रहेगी, तब तक की संक्रमणावस्था में समाज में कुछ आलसी, अलाल, मुफ्तखोर लोग यत्र-तत्र पाये जा सकते हैं। लेकिन आज की तरह ये अनुत्पादक श्रम-तस्कर समाज में सत्ता और प्रतिष्ठा के अधिकारी नहीं होंगे। उनका परोपजीवित्व उनको लोकापवाद और अनादर का पात्र बनायेगा। इतनी लोकनिन्दा पर्याप्त प्रतिबंधक सिद्ध होगी। काम की प्रेरणा जाग्रत रखने के लिए उपभोग की विषमता को प्रतिष्ठा देने की अपेक्षा यह स्थिति कम हानिकारक मानी जानी चाहिए।

—दादा धर्माधिकारी

www.vinoba.in

जनतन्त्र बनाम अखबार

जनतंत्र के नाम पर आज कितने ही वहम प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए चुनाव उनमें से एक मुख्य है, चुनाव की पद्धति आज जनतंत्र की सुरक्षा की गारंटी मानी जाती है, जब कि हम दो आम चुनावों के प्रत्यक्ष अनुभव से देख चुके हैं कि इस तरह के आम चुनाव जनतंत्र के नाटक मात्र हैं। इतना ही नहीं, विशाल संगठन और अपरिमित खर्च की आवश्यकता के कारण वास्तव में वे प्रच्छन्न रूप से तानाशाही को भी जन्म देने वाले हैं।

इसी तरह दूसरा वहम आज अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं के बारे में प्रचलित है। कहा जाता है कि वे जनमत को प्रगट करने के महत्त्व के साधन हैं, अतः जनतंत्र की सुरक्षा के लिए उनका अस्तित्व जरूरी है। कुछ अंशों में यह सही होते हुए भी व्यापारी-प्रतिस्पर्धा के इस युग में और उत्तरोत्तर विशाल साधनों की आवश्यकता के कारण आज के अखबार धीरे-धीरे चन्द संपन्न और प्रभावशाली व्यक्तियों के हाथ के औजार मात्र बनते जा रहे हैं। वे जनमत के प्रतिबिम्ब नहीं, बल्कि इसके विपरीत झूठे-सच्चे जनमत को तैयार करने के जबर्दस्त साधन बनते जा रहे हैं, जिनका उपयोग चंद व्यक्तियों या अमुक वर्ग के हित में जनता की राय को इधर या उधर मोड़ने में किया जाता है। अभी हाल ही में (१७ मई को) इंग्लैंड की पार्लियामेंट में वहाँ के दैनिक अखबारों के बारे में चर्चा हुई थी, तो उस दौरान में जो बातें कही गयीं, वे आज के अखबारों की वास्तविक स्थिति पर अच्छा प्रकाश डालती हैं। पार्लियामेंट के सदस्य श्री फ्रैंक ऐलुअन ने, जो खुद एक पत्रकार हैं, बताया कि—

> "इंग्लैंड का अखबारी उद्योग चार बड़ी कंपनियों के हाथ में है, जिन्होंने गतवर्ष २ करोड़ ७० लाख पौंड व्यापारी मुनाफा कमाया। नतीजा यह हुआ है कि पिछले बारह महीनों में बहुत से पुराने दैनिक अखबार (आर्थिक दृष्टि से इन बड़े अखबारों के मुकाबले नहीं टिक सकने के कारण) बन्द हो गये! इन प्रभावशाली अखबारी कंपनियों के पीछे चन्द व्यक्ति (यानी उनके मालिक और संचालक) हैं, जो अत्यन्त अमीर, अत्यन्त प्रभावशाली और कुछ अपवादों को छोड़ कर, अत्यन्त प्रतिगामी लोग हैं। इन लोगों के लिए अपने हितों को राष्ट्रीय हित का रूप देना बड़ा आसान है।"

श्री फ्रैंक ऐलुअन ने आगे चेतावनी देते हुए कहा कि "इस तरह अखबारों का चंद लोगों के हाथ में होना जनतंत्र को दूषित कर रहा है और आम जनता के हितों को इससे बड़ा खतरा है।" इस संदर्भ में अखबारों की स्वतंत्रता का मतलब सिर्फ चंद करोड़पतियों की स्वतंत्रता से और जो उनके हित के अनुकूल खबरें हों, उन्हें छापने तथा प्रतिकूल खबरों को न छापने की आजादी से है। ("हिन्दू", १९-५-५७)

अखबारों के संचालक अपने मुनाफे के लिए किस तरह जनता के आचार-विचार को दूषित कर रहे हैं, उसका जिक्र करते हुए एक दूसरे सदस्य श्री ऐंथोनी कैरशा ने बताया कि अखबारों की बिक्री बढ़ाने के लिए सनसनी पैदा करने वाली और विकारों को उभाड़ने वाली खबरों को छापने की अति हो गयी है। दूसरे अखबारों से भिन्न मालूम होने और अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए हर अखबार रोज किसी तुच्छ-सी घटना या बात को महत्त्व देता है और यह रिवाज इतना व्यापक हो गया है कि "अखबार पढ़ने वाली जनता के लिए सार्वजनिक मामलों के महत्त्व को सही-सही आँकना और उसके बारे में कोई सुसंगत राय कायम करना करीब-करीब असंभव हो गया है। क्या यह जनतंत्र की सेवा है?"

इंग्लैंड जनतंत्रीय कहे जाने वाले देशों का अच्छा नमूना माना जाता है। उस देश के प्रेस का यानी अखबारों का यह हाल है! फिर रूस और चीन जैसे मुल्कों में तो, जहाँ सिर्फ सरकारी या कम्यूनिस्ट पार्टी के अखबार ही छापे जा सकते हैं, जनता की राय का कोई सवाल ही नहीं है, क्योंकि शासक लोगों के पक्ष के सिवा दूसरा कोई पक्ष वहाँ प्रगट ही नहीं हो सकता। वहाँ के अखबार भी जनमत के प्रतिबिम्ब नहीं, बल्कि जनता की राय को मोड़ने वाले जबर्दस्त साधन बन गये हैं। वहाँ जनता को अखबारों में वही पढ़ने को मिलता है, जो वहाँ का शासक-वर्ग चाहता है। इस तरह तथाकथित जनतंत्री मुल्कों में और साम्यवादी मुल्कों में सभी जगह अखबार जनता के रहनुमा होने के बजाय चंद लोगों के स्वार्थ या सत्ता-लिप्सा की पूर्ति के साधन बन गये हैं। अतः अखबार जनतंत्र के आधार हैं, इस भ्रम में हमें नहीं रहना चाहिए। जनता की सुरक्षा अखबारों में प्रगट होने वाले विचारों में नहीं, उसके खुद के विवेक में है।

खादीग्राम, —सिद्धराज

बेदखल भूमिहीनों को जमीनें वापस!

[बाबा राघवदासजी का यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण वक्तव्य संमेलन-अंकों के कारण समय पर हम न दे सके, इसका हमें खेद है। —सं०]

विनोबाजी जब उत्तर प्रदेश की यात्रा में लखनौ नगरी में गये थे, तब माल-विभाग के प्रमुख अधिकारियों से उन्होंने कहा था कि "आपके जमींदारी-उन्मूलन-कानून में यह दोष रह गया है कि जो जमीन गाँव-समाज की होगी, वह पहले बेजमीन परिवारों को न देकर, जिनके पास ६½ एकड़ से कम जमीन है, उनको दी जाने वाली है और उसमें से जो बचेगी, वह बेजमीनवालों को मिलेगी। यह बात न्याययुक्त नहीं है। जो अधिक दिनों का भूखा है, उसको भोजन करने का प्रथम हक है; यही न्याय है।"

इस पर उस कानून में संशोधन हुआ और गाँव-समाज की जमीन बेजमीनवालों को देने का निश्चय हुआ। इसके अनुसार ९३ लाख एकड़ जमीन में से, जो गाँव-समाज को मिलने वाली थी, २१ लाख एकड़ जमीन जोतने के योग्य निकली। अगर यह जमीन बेजमीनवाले परिवारों में बँट जायगी, तो कम-से-कम ८ लाख परिवारों को वह मिलेगी।

> पर अपनी पदयात्रा में हमने देखा और प्रमुख कार्यकर्ताओं की भी यह शिकायत है कि यह जमीन बेजमीनों में नहीं बँटी और कहीं बँटी है, तो नाममात्र के लिए। पर जो जमीनवाले जबर्दस्त हैं, उन्होंने उसको कहीं-कहीं हथिया लिया है, वे उसे जोतते हैं और सरकार को लगान भी नहीं देते हैं!
>
> झाँसी जिले में ऐसी ही जमीन या तो गरीब बेजमीन वालों ने पुराने समय में जमींदारों को नजराना देकर ली थी और तोड़ी थी, पर उनका कहना है कि लेखपाल पटवारी ने उसको कागज में इन्दराज न कर पड़ती लिखा था, इसलिए वह गाँव-समाज की हो गयी थी। ऐसा मान भी लिया गया और उन पर मुकदमे चले, गाँव-समाज की ओर से और वे जमीनें निकाल ली गयीं, उन बेजमीन वालों से और उन पर सख्त जुर्माना भी हुआ!! एक स्थान पर तो इतना हुआ कि एक डेसिमल पर १) रु० के हिसाब से १ एकड़ ६० डेसिमल पर १६०) रु० जुर्माना हुआ, जो इन गरीब बेजमीन परिवारों की कमर तोड़ने ही वाला था।

यह बात जब मुझे मालूम हुई, तो मैंने इसे भूदान-यज्ञ को चुनौती माना, क्योंकि विनोबाजी की सलाह से यह जमीन बेजमीनवालों की मिली थी। इसलिए कानून में संशोधन भी हुआ था। और यहाँ जमीन देना तो दरकिनार, पर उन गरीबों पर कस कर जुर्माना हुआ! जो भूदान-यज्ञ इसी प्रश्न को हल करने के लिए, अमन तथा सद्भावना जागृत करने के लिए किया जा रहा है, उसको यह जबरदस्त आघात ही तो था। इसलिए मैंने अनशन करने की बात कही।

मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता होती है कि प्रमुख अधिकारियों ने अनशन के पहले ही आवश्यक हिदायतें देकर ऐसे कई सौ बे-जमीनवालों को जमीन लौटाने का आदेश दिया है और यह भी आश्वासन दिया है कि और जो ऐसे परिवार हैं, जिनकी संख्या भी हजारों होगी, उनको भी जमीन लौटा दी जायगी।

> मैं विश्वास करता हूँ कि उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में, जिनका हक जिस जमीन पर है, वह उनको मिल जायगा और भूदान-यज्ञ का जो उद्देश्य है, उसको पूरा करने में सहायक होकर सद्भावना का वातावरण पैदा किया जायगा।

—(बाबा) राघवदास

जीवन कैसे जीयें?

स्वराज्य-प्राप्ति के बाद कार्यकर्ता-गण न मालूम कहाँ छिप गये हैं? इसलिए स्वराज्य-प्राप्ति के बाद स्वतंत्र सेवा तो शून्यवत् हो गयी है और प्रतिनिधियों के मार्फत कार्य चलाते हैं। समाज-कार्य सरकार पर सौंप दिया और धर्म-कार्य मंदिर, मस्जिद, चर्च पर! खाना-पीना ही अपने लिए रखा। इस तरह नागरिक जीवन पुरुषार्थहीन बना है।

परंतु मानव-जीवन में खाना-पीना पुरुषार्थ नहीं माना जाता। जिसमें समाज-सेवा, धर्म-सेवा नहीं, वह मानव-जीवन नहीं। देह के साथ केवल आहारादि बातें ही जुड़ी रहें, यह सांस्कृतिक जीवन का लक्षण नहीं है, वह मानव की संस्कृति ही नहीं है। वह पशुजीवन है। जहाँ व्यक्ति के जीवन में सामुदायिक पुरुषार्थ नहीं, वह जीवन जीने में सार ही क्या?

(कोल्लेनगोड़ा, पालघाट, २७-५-'५७) —विनोबा

www.vinoba.in

सर्वोदय-संमेलन-सामग्री:

[ता. २४ और ता. ३१ मई के अंकों में हमने सर्वोदय-सम्मेलन की ही पूरी सामग्री दे दी है, फिर भी कुछ सामग्री बच गयी है। जैसा कि ता. २४ मई के अंक में हमने निवेदन किया था, अब इन अंकों में यह बची हुई सामग्री पूरी कर दी जायगी। संपूर्ण और अविकल सामग्री तो पाठकों को रिपोर्ट के रूप में ही अलग से, एकत्र प्राप्त हो सकेगी। —सं०]

उत्तर-मध्यप्रदेश से—

(विनोबा)

हिंदीवाले इतने उदार हैं कि उन्होंने हमारी प्री-बेसिक हिंदी के वास्ते भी हमको इनाम* दिया है! वास्तव में यह हिंदी की सहनशीलता ही है। बाकी, जो सामर्थ्य तमिल और बंगाली भाषा और साहित्य में है, वह हिंदी भाषा में कहाँ है? ऐसा कोई दावा हिंदी कर नहीं सकती। परंतु वह यह दावा कर सकती है कि अधिक लोग हिंदी बोलते हैं, क्योंकि वह सहनशील भाषा है। बोलते चले जाओ, गलतियाँ करते जाओ, वे लोग मान्यता देते जायेंगे, हँसेंगे नहीं, जैसे कि पूना के लोग! पूना जाकर मराठी में एक व्याख्यान दे दो और किसी जगह अक्षरोच्चारण की भी गलती हो जायगी, तो वे लोग हँसेंगे, क्योंकि उनसे अपनी भाषा की गलती सहन नहीं होती है! पर हिंदी में तो हमारे जैसे कितने ही वक्ता बकते जाते हैं और वे लोग हमको सुनते हैं और समझ भी लेते हैं!

यह सहनशीलता हिंदी भाषा की शक्ति है। इसका अर्थ यह है कि हर चीज का मानसिक अर्थ वे ग्रहण करते हैं। वे सहनशील हैं, क्योंकि उनके पूर्वजों का मूल स्थान गंगा-यमुना के प्रदेश में, हिमालय के स्थान में है। सारे भारत के लोग किसी-न-किसी निमित्त से वहाँ जाते थे, अतः वह प्रेम का संगम-स्थान बना। हम समझते हैं कि उत्तर प्रदेश की यह मुख्य चीज है, मुख्य शक्ति है। मथुरा, काशी, प्रयाग, वृन्दावन और उधर हिमालय का बद्रीकेदार! कुल हिंदुस्तान के लोग किसी-न-किसी निमित्त से वहाँ पहुँच जाते हैं। **इसलिए उत्तर प्रदेश सारे हिंदुस्तान के लोगों का प्रेम का संगम-स्थान है। इस दृष्टि से 'अप्रोच' करेंगे, तो में बहुत यश मिलेगा।**

उत्तर प्रदेश में भूदान के विचार का प्रचार बाबा राघवदासजी ने किया। हम समझते हैं कि लोगों को जितना भूदान का विचार ग्राह्य हुआ, उससे बहुत ज्यादा ग्रामदान का विचार ग्राह्य होगा, क्योंकि वहाँ दिल एक-दूसरे से नजदीक-नजदीक हैं। सहनशीलता भी है। परंतु नजदीकपन होने के कारण वहाँ प्रेम और सहयोग भी बढ़ सकता है, द्वेष और झगड़े भी बढ़ सकते हैं! एक-दूसरे के नजदीक आने से आलिंगन भी हो सकता है और कुश्ती भी हो सकती है! इसलिए वहाँ झगड़ा भी संभव है और प्रेम का रंग लगेगा, तो प्रेम भी खूब बढ़ सकता है। ग्रामदान के विचार में यह खूबी है कि जहाँ वह एक जगह ग्रहण होगा, तो उसके आगे सभी जगह ग्रहण होगा। घर-घर अप्रोच होना चाहिए, इसलिए कि यहाँ लोग नजदीक-नजदीक रहते हैं। अतः परस्पर-प्रेम और सहयोग रखेंगे, तो ताकत बढ़ेगी, नहीं तो संघर्ष होगा। अलग-अलग आप रह नहीं सकते। उस हालत में प्रेम के सिवा कोई चारा नहीं है। अगर प्रेम नहीं करना है, तो वह कुश्ती का अखाड़ा हो जायगा, परंतु अगर शांत जीवन चाहते हो, तो प्रेम से रहना पड़ेगा।

'५७ साल की भावना इतने वर्षों से बनी है, तो लोगों के मन में उत्कंठा होती है कि क्या होगा? पर अगर मन में उत्कंठा है, तो आप जो करियेगा, वही होगा। बिना कुछ काम किये कुछ अजीब-सी दैवी घटना हो जायगी, ऐसी बात नहीं है। दैववाद पर विश्वास रख कर बैठे रहेंगे और समझेंगे कि '५७ में क्रांति हो जायगी, तो वह गलत है। हम पूरी ताकत लगायेंगे, तो काम जल्दी होगा। इसके वास्ते और दो-तीन चीजें करनी होंगी :

(१) एक तो इसके वास्ते सतत प्रयत्न करना होगा। यह काम बिना सातत्ययोग के होने वाला नहीं है।

(२) अपनी जबान से हमेशा प्रिय शब्द ही निकालना होगा। अन्य प्रकार के शब्द निकले ही नहीं, ऐसा होना चाहिए।

'५७ में एक भावना बनी है और सब तरह का पक्ष-सहयोग प्राप्त है। वातावरण भी अनुकूल है, तो उसका हमें पूरा लाभ उठाना चाहिए। †

*राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति (वर्धा) ने अपने पुरी-संमेलन में विनोबाजी को पुरस्कृत किया था।

† उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश के कार्यकर्ताओं से चर्चा, कालड़ी, १०-५-'५७

'एक दिन में क्रांति' का अर्थ

प्रश्न : आप एक दिन ऐसा क्यों नहीं तय करते, जिस दिन सारे देश में जमीन का ग्रामीकरण हो?

विनोबा—ऐसे विचार को उत्तेजन तो हमने दिया कि एक दिन में बँटवारा हो जायगा। पर वह दिन पहले से तय नहीं किया जाता, वह आता है! अगर हम अपनी मृत्यु का दिन तय कर देते हैं, तो वह आत्महत्या होती है। मृत्यु होती है, एक ही दिन में; पर वह दिन 'आता' है। वैसे ही एक ही दिन में काम होने वाला है, पाँच-पचास दिन में काम नहीं होने वाला है, इसमें कोई शक नहीं। पर वह दिन लाने के लिए हमको मेहनत करनी पड़ेगी और फिर हमें यह सहज मालूम हो जायगा कि अब वह दिन आ रहा है! ह म ही एक तारीखतय करें, तो परमेश्वर का कार्य हमने कर लिया ऐसा होगा, जो हम नहीं कर सकते! कुछ ज्योतिषी लोग होते हैं, जो शायद तारीख-वारीख तय करते हैं। अभी एक भाई ने हमसे कहा कि आपकी मृत्यु इतने साल, इतने महीने और इतने दिन के बाद होने वाली है! वह दिन भी उन्होंने जाहिर कर दिया! अब अगर हम हिम्मत करके आज ही आत्महत्या कर लें, तो बेचारे का भविष्य ही खतम हो जायगा! तो, इस तरह भविष्यवादी चाहे कुछ कह दें, लेकिन हम वैसा नहीं कह सकते, बल्कि यह अश्रद्धा का और अहंकार का लक्षण होगा। एक दिन हम निश्चित करें और उस दिन हम कहें कि 'यह होना है, और यह कहना भी हमारे हाथ में है, ऐसा हम मानें, तो वह गलत बात है! हाँ, ऐसा एक दिन अवश्य आने वाला है और उस दिन को ही हमें लाना है। उसको नजदीक लाने के लिए ही हमें पूरी कोशिश करनी है। उस कोशिश में हमारी दृढ़ श्रद्धा हो, तो वह कोशिश प्रखर बनती है और तब एक दिन में काम होता है। उसीकी तैयारी हम करें, शेष परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए। सबका सब चिंतन हम न करें, थोड़ा भार उस पर भी रहने दें, तो अच्छा है!

(सर्वोदयनगर, कालड़ी, १०-५)

पंजाब से—

(विनोबा)

पूरा पंजाब एक गुड्विल मिशन है और वह भारतीय संस्कृति का अन्य संस्कृतियों के साथ बना हुआ एक संगम-स्थान है। प्राचीन काल से आज तक पंजाब की वही हालत रही है, **जैसे केरल की समुद्र की तरफ से है।** इसीलिए पंजाब याने "गुडविल मिशन" है। अतः पंजाब में परस्पर-प्रेम, सौहार्द और सौमनस्य, जिस किसी भी युक्ति से सध सके, उस युक्ति से साधना चाहिए। और यह होगा, तो वहाँ ताकत बहुत बढ़ेगी। पंजाब में पाँच नदियाँ हैं। यह अपने देश का बड़ा वैभव है। वहाँ कुछ फसल बढ़ाने का इंतजाम हुआ है। दूसरे देशों की तुलना में लोग वहाँ खुशहाल भी होंगे। परंतु उनके जीवन का स्तर जैसे ऊँचा उठेगा, वैसे उनके चिंतन का भी स्तर ऊँचा उठना चाहिए। **अगर जीवन का स्तर ऊँचा रहा और चिंतन का स्तर नीचा रहा तो उससे बड़ा ही खतरा है।** उससे बहुत ही तकलीफें खड़ी होंगी। इसलिए हमें वहाँ सौमनस्य बढ़ाना है। वहाँ जो भिन्न-भिन्न पक्ष और पंथ हैं, उन सबके साथ हमारा मेल हो, ऐसा होना चाहिए। हमारा यह भूदान, ग्रामदान एक ऐसा प्लैटफार्म है कि इसमें सब लोगों को इकट्ठा होने के लिए मौका मिलता है। ऐसा मौका दूसरी किसी चीज में हम नहीं देखते हैं। अतः पंजाब पर एक बड़ी भारी जिम्मेवारी है। आज पाकिस्तान और हिंदुस्तान के बीच अच्छे संबंध नहीं हैं। इसलिए तो हमारी जिम्मेवारी और भी बढ़ जाती है।

हम अपने देश में ऐसा कार्य करें कि जिसकी सुगंध पाकिस्तान में फैले और पाकिस्तान वालों के मन पर पंजाब के प्रेम का असर पड़े।

पंजाब का मुझे जो दर्शन है, वह मुझे बहुत ही खींचता है। वहाँ करने का काम बहुत है, परंतु पचासों कामों में हम न पड़ें। उसकी कोई जरूरत नहीं है। यह कार्य ऐसा कार्य है कि अगर हम पूरे स्नेहभाव से और पूरी एकाग्रता से उसमें लग जाते हैं, तो पंजाब की ताकत बढ़ेगी।

www.vinoba.in

हिंदुस्तान का बचाव कौन करेगा, ऐसा सवाल जब पूछा जाता है, तो तुरंत जवाब मिलता है कि सीमा प्रांत! पर वहाँ ज्यादा-से-ज्यादा फौजी ताकत बनाओ, ऐसा सोचा जाता है! यह हिंसा की पुरानी प्रक्रिया है! हमको अब यह सोचना चाहिए कि सीमा प्रांत में ज्यादा-से-ज्यादा प्रेम की शक्ति किस तरह प्रगट हो। उसके लिए हमें कोशिश करनी चाहिए। इसके लिए ग्रामदान उत्तम उपाय है। लाला अचिंतरामजी कह रहे थे कि पंजाब में ग्रामदान नहीं होगा। तमिलनाड़ के नेता भी ऐसा ही कहते थे कि यहाँ ग्रामदान असंभव है! परंतु यहाँ ग्रामदान हुए और अच्छे हुए। वे ऐसे देहातों में भी हुए कि जहाँ सब जाति के लोग रहते हैं, पढ़े-लिखे भी लोग हैं और जमीन भी अच्छी है। यह तो युग-धर्म प्रगट हो रहा है। हम विश्वास करते हैं कि पंजाब में ग्रामदान होगा और हमें उसी पर जोर देना होगा।*

* पंजाब, दिल्ली आदि प्रांतों के कार्यकर्ताओं के साथ की चर्चा का अंश।
सर्वोदयनगर, कालड़ी, ९-५

एक खतरा!

(विनोबा)

अब हम ऐसी मंजिल पर आ पहुँचे हैं कि जहाँ हमारे काम के लिए सब लोगों की सहानुभूति भी मिल रही है। ग्रामदान के विचार में बहुत सारे राजनीतिज्ञ और अर्थशास्त्रज्ञ संतुष्ट हैं। यह विचार धर्म-विचार है, इसलिए धार्मिक लोगों को तो इससे ज्यादा संतोष है। भूदान को अच्छा समझते हुए भी अर्थशास्त्रज्ञ और राजनीतिज्ञों को पूरी तृप्ति भूदान में नहीं होती थी। वे कुछ आक्षेप करते थे। उन आक्षेपों में कुछ तथ्य नहीं था, वे बेबुनियाद थे, ऐसा हम नहीं कह सकते, परंतु ग्रामदान के विचार में सब लोगों की बुद्धि का समाधान होता है। वह हरेक को अच्छा लगता है और उसमें सबकी परितृप्ति होती है। यह युग-धर्म का, युग-विचार का लक्षण है। मुख्य विचार के साथ सहमत होने के बाद आगे वहाँ काश्तकारों के लिए सारी जमीन इकट्ठी की जाय या जमीन के टुकड़े किये जायँ या कलेक्टिव फार्मिंग किया जाय, ये सारी बातें तफसील की हैं। इसमें किसी एक का ही आग्रह न रखा जाय। गाँव की परिस्थिति के मुताबिक वहाँ के लोग जो पसंद करें, वैसा किया जाय। जमीन की मालकियत नहीं रहेगी, उसको रेहन नहीं रखा जायगा, वह पड़ती नहीं रखी जायगी, वह बेची नहीं जायगी और आठ-आठ, दस-दस साल में फिर से बँटवारा होगा, इतना मान लेने के बाद सारी जमीन का एक ही खेत बनाना है कि अलग-अलग, यह गाँव के लोग मिल करके तय करेंगे। इसमें हमारा कोई आग्रह नहीं है और आग्रह हो भी नहीं सकता, क्योंकि यह अनुभव का विषय है। अगर हम सारी जमीन इकट्ठी करते हैं, तो थोड़ा-सा आक्षेप आ सकता है कि उससे इनीशियेटिव नहीं रहेगा। परंतु हम वैसा भी आग्रह नहीं करते हैं, इसीलिए ग्रामदान एक निर्भय विचार, सर्वमान्य विचार हो गया है।

पर सर्वमान्य विचार में एक खतरा भी रहता है कि उसे सब कोई मानते हैं, इसीलिए कोई भी उस काम में लगते नहीं हैं। अब इसमें क्या करना रहा है, ऐसा लोगों को लगता है। अगर ग्रामदान के लिए सभी पक्षों का सम्मेलन बुलाया जाय, तो ग्रामदान का प्रस्ताव तुरंत ही पास हो जायगा। सब कोई कहेंगे कि यह सबसे अच्छा काम है। लेकिन वे कल खुद करने के लिए कम आग्रह रख सकते हैं। अतः जो काम सार्वजनिक हो जाता है, उसमें सब लोगों की निष्ठा बनी रहे और सबका प्रयत्न उसमें जुड़ जाय, यह करना होता है, नहीं तो धर्म क्षीण हो जायगा। सनातन धर्म ज्यादा-से-ज्यादा बलवान् होना चाहिए। परंतु अगर सब लोग उसमें नहीं लगते हैं, तो जिस शाश्वत धर्म को ही ज्यादा-से-ज्यादा बलवान् होना चाहिए, वही कम-से-कम बलवान् रह जाता है।

अतः कहीं यह न हो जाय कि ग्रामदान अच्छा है, करने लायक है, ऐसा तो सब कहें, पर उसमें से मतलब इतना ही निकले कि अब भूदान की कोई जरूरत नहीं है! जब तक ग्रामदान का काम शुरू नहीं हुआ था, तब तक लोग थोड़ी जमीन, छठा, आठवाँ हिस्सा देते थे, परंतु अब "जमीन देने की जरूरत नहीं है, अगर ली जाय, तो ग्रामदान ही लिया जाय, नहीं तो कुछ नहीं," ऐसा भी न हो। कुशलता से काम किया जाय। लोगों के पास क्रम-क्रम से पहुँचा जाय। परंतु "मेरे तो मुख राम नाम दूसरा न कोई" अर्थात् अपने मुख से तो ग्रामदान का ही नाम लेना चाहिए। दूसरा कोई विचार नहीं। यह विचार ही सब लोगों को समझाना चाहिए। इसका मतलब यह है कि पहले हमें वह समझना चाहिए और उसके अनुसार अपने जीवन में आचरण होना चाहिए। यह तो नहीं हो सकता कि हमारे जीवन में तो निजी मालकियत बनी रहे, पर हम गाँव के सब लोगों की मालकियत विसर्जन करने के लिए कहें! पहले अपनी मोह-ग्रंथि को तोड़ना होगा, तब तक दूसरे का मुँह नहीं खुलेगा।*

* पंजाब, दिल्ली, राजस्थान के कार्यकर्ताओं से, सर्वोदयनगर, कालड़ी ९-५

सर्वोदय-संमेलन के लिए प्राप्त चंद संदेश

…मुझे सख्त अफसोस है कि आज जिस सर्वोदय-संमेलन का आरंभ हो रहा है, उसमें मैं उपस्थित नहीं हो सकूँगा। पहले मेरी यह योजना थी कि ता० ११ की रात को कालड़ी पहुँच कर आप सबके साथ कुछ घंटों के लिए रहूँ। लेकिन बदकिस्मती से असेंब्ली की बैठक हमारी अपेक्षा से एक दिन अधिक चलानी पड़ी और इसलिए मुझे वहाँ आने का विचार छोड़ देना चाहिए।

मैं आपके और दूसरे मित्रों के प्रति स्वयं अपनी तथा अपने सहकारियों की शुभ-कामनाएँ प्रकट करना चाहता हूँ। मेरे सहकारी, विधिमंत्रीजी, कल सर्वोदय-संमेलन में उपस्थित रहेंगे और हम सबकी शुभ-कामनाएँ निवेदित करेंगे। हमें पूरा-पूरा भरोसा है कि सारी ग्रामीण जनता को पारस्परिक सहकारिता के आधार पर संगठित करने के जो विचार आप क्रमशः विकसित कर रहे हैं, भूमि विषयक पारस्परिक संबंध, ग्रामोद्योग, ग्रामीण शिक्षण, गाँवों का सार्वजनिक स्वास्थ्य जैसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के व्यावहारिक हल खोजने में सहायक होंगे। इसलिए जिन लोगों को ग्रामीण दरिद्र जनता की सेवा में दिलचस्पी है, वे सब इस संमेलन में होने वाली चर्चाओं की तरफ बड़ी उत्सुकता और ध्यान से देख रहे हैं।

…मैं आशा करता हूँ कि आपसे मिलने और विचार-विनिमय के अवसर और भी मुझे मिलेंगे, जिससे कि भूदान-आंदोलन, जिसके कि आप प्रतिनिधि हैं, और केरल की कम्युनिस्ट पार्टी के बीच व्यावहारिक कार्य में सहकार्य की दिशा हम निश्चित कर सकें।

त्रिवेंद्रम, ९-५-'५७ —ई. एम.एस. नंबुद्रीपाद

विनोबाजी जैसे महान् पुरुष के नेतृत्व में होनेवाले संमेलन के लिए मेरे जैसे व्यक्ति का कोई संदेश देना उपयुक्त नहीं है। विनोबाजी जिस भू-क्रान्ति की कल्पना करते हैं, उसके बारे में कुछ कहने के लिए मेरे पास अनुभव नहीं है। मैं इतना कह सकता हूँ कि इस क्रान्ति की जरूरत अब हर एक मान्य करता है। उसके बिना हिन्दुस्तान प्रगति नहीं कर सकता। मार्ग और साधनों के विषय में हमारा मतभेद हो सकता है, परन्तु यह चीज महसूस की जा रही है कि यह क्रांति होनी चाहिए और घोंघे की चाल से नहीं, बल्कि जल्दी। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मेरी सेवाओं की, उनकी जो कुछ भी कीमत हो, वे विनोबाजी के हवाले हैं।

९, कोहिनूर रोड, दादर, बंबई १४ —एस. ए. डांगे
४ मई, १९५७

भूदान-आंदोलन की जो प्रेरणा है, उसको मानने वालों में से मैं एक हूँ। मेरी अपनी राय है कि जब तक उस दृष्टिकोण का स्वीकार नहीं किया जाता, हमारे अन्य सवालों को भी हल करना नामुमकिन है। लाखों लोगों ने उस जीवन-दृष्टि का स्वीकार किया है, यही हमारे लिए एक मंगल घटना है। पू० आचार्य विनोबा भावे और आदरणीय साथी जयप्रकाश आदि नेताओं के प्रयत्नों से भारत में एक नयी विचारधारा प्रसूत हो रही है और मुझे उम्मीद है कि उसके जरिये हमारे जीवन में आमूलाग्र परिवर्तन होकर रहेगा। हमारी कामनाएँ पूरी होंगी। मैं संमेलन की कामयाबी चाहता हूँ।

—एस. एम. जोशी

सर्वोदय-सम्मेलन, कालड़ी में आये हुए प्रतिनिधि

दिल्ली	२६	पंजाब	१५७	राजस्थान	२२३
मध्यप्रदेश	४७१	उत्तर-प्रदेश	५०४	बिहार	१००८
बंगाल	४१७	असम	३४	उडीसा	४२७
तमिलनाड़	७१९	आंध्र	२९०	मैसूर	४४४
केरल	५३३	बंबई-राज्य	२५०८		
				कुल संख्या	७७६१

[रजिस्टर में दर्ज आगत सेवकों की यह प्रदेशवार सूची है, परंतु बिना दर्ज हुए भी अनेक सेवक आये थे, जिनकी संख्या करीब दो हजार होगी। इनके अतिरिक्त केरल की ग्रामीण जनता भी काफी उपस्थित थी।]

www.vinoba.in

उत्तर बुनियादी विद्यार्थियों के लिए जीवित शिक्षा

(देवीप्रसाद, हिं० तालीमी संघ)

सन् सत्तावन् के भूदान-ग्रामदान-आन्दोलन में हिस्सा लेना हर भावनाशील और चिन्तनशील व्यक्ति का फ़र्ज़ है और विशेष तौर पर पढ़े-लिखे व्यक्तियों, शिक्षकों और स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए तो हर माने में यह कार्यक्रम अत्यन्त आवश्यक है। यह आन्दोलन एकांगी नहीं, इसका महत्त्व त्रिविध है। गाँवों का नवनिर्माण और लोकनीति की स्थापना के साथ-साथ ग्रामदान-यज्ञ-आरोहण का सबसे बड़ा महत्त्व "व्यक्ति" का निर्माण है। आने वाले युग में यानी ग्रामराज में हर नागरिक तो जैसा होगा, होगा ही, किन्तु आज जो व्यक्ति इस यज्ञ में आहुति देता है, यह यज्ञ उसे नया व्यक्ति बनायेगा। जो व्यक्ति इसमें पूरा-पूरा कूदा है या कूदेगा, उसे सत्याग्रही-लोकसेवक कहा गया है। पर सत्याग्रही-लोकसेवक बनने के लिए गहरी तैयारी की ज़रूरत है। उसके लिए त्रिविध निष्ठा ज़रूरी है—सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह के रूप में। यही कारण है कि भूदान-आन्दोलन व्यक्ति की तैयारी का भी आन्दोलन है, जो विनोबाजी के शब्दों में हमसे अपेक्षा रखता है कि

> "ज्ञान-किरणों के सामने किसी प्रकार का अज्ञान सहन नहीं किया जाता है। पूर्ण नम्र, फिर भी अत्यन्त प्रखर होकर काम करो। चित्त को किसी भी प्रकार के रागद्वेष का, मानापमान का स्पर्श मत होने दो। वह सब अन्धकार है।"

नयी तालीम के लोगों का तो यह फ़र्ज़ ही है कि वे अपने शिक्षाक्रम को भूदान-मूलक बनायें और अपनी पूरी शक्ति ग्रामदान-यज्ञ में लगा कर यह आदर्श पूरा करें!

नयी-तालीम-जगत् की मुख्य शक्ति, जो इस क्रान्ति में पूरी-पूरी लग सकती है, वह उत्तर बुनियादी के विद्यालयों में पड़ी है। उत्तर-बुनियादी के विद्यार्थी एक कम्पाऊंड—या वह गाँव ही क्यों न हों—के अन्दर अपने आपको सीमित न रख कर बाहर निकल पड़ सकते हैं।

इस तरह का काम जगह-जगह आरम्भ हुआ भी है। अमरावती जिले के करजगाँव (लोणी) स्वावलंबी उत्तर बुनियादी विद्यालय ने '५७ की क्रान्ति को अपनी मुख्य प्रवृत्ति माना है। करजगाँव की इस टोली ने हमारे साथ ७ मार्च से यात्रा शुरू की थी। इस अनुभव के बाद हमारा यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया है कि उत्तर बुनियादी के स्तर पर ग्रामदान-यज्ञ को आज केवल शिक्षा का माध्यम ही नहीं, बल्कि उसे उसका मूल ही बना लेना चाहिए। यह कहते हुए हमें बिलकुल भी संकोच नहीं होता है कि नयी तालीम के विद्यालय भी आज निर्जीव-से ही हो गये हैं।

हमारी टोली में इन विद्यार्थियों के अलावा और भी आठ-नौ भाई थे। हमारे इस चलते-फिरते शिविर का वातावरण बिलकुल विद्यालय जैसा ही रहा। हम सब हर समय छात्र-भावना से ही काम करते रहे। हममें से कइयों को भूदान का अनुभव था। भाई पाटणकर तो ४ वर्षों से भूदान-यज्ञ में ही लगे हुए हैं, किन्तु विनोबाजी के द्वारा उड़ीसा और उसके बाद तमिलनाड़ में ग्रामदान-युग के आरम्भ से जो रुख आन्दोलन ने लिया, उस रास्ते के लिए हम सभी नये थे।

मोर्शी तहसील में जो 'वाई' नाम का गाँव ग्रामदान में मिला था, उसीने हमें प्रेरित किया। तिवसाघाट में एक शिविर किया। वहाँ से ६ सेवक अमरावती और बैतूल जिलों की सरहद के गाँवों को यह वार्ता सुनाने गये। हमारा चलता-फिरता विद्यालय शुरू हो गया।

अभी तक २७ गाँवों का अनुभव हुआ था। फिर नयी योजना बनायी। सुबह को चार-चार टोलियों में बँट जाते और शाम तक एक-एक गाँव में पहुँचते थे। अक्सर यह गाँव कुछ बड़ा होता था। इस गाँव में खास तौर पर अधिक शक्ति लगाते थे। शाम को सम्मिलित फेरी और सभा की मुनादी देते थे। इस बार इस मुनादी का रूप भी कुछ बदला। पहले केवल यही सूचना देते थे कि रात में भूदान की सभा होगी, किन्तु हमने देखा कि इससे काम नहीं चलता। मुनादी भी गाँव के कोने-कोने में एक छोटे-से ३ मिनिट के भाषण के रूप में देने लगे। रात को अक्सर अच्छी सभा होती थी। नौ बजे के बाद ही शुरू होती थी और कभी-कभी तो साढ़े बारह तक चलती थी।

हमारी इस बड़ी टोली का असली काम अगले दिन सुबह होता था। हम गाँव में घर-घर में फैल जाते और साहित्य-प्रचार तथा विचार-प्रसार करते थे। जो काम रात की सभा से होता था, अगले दिन उसका विस्तार करते। 'भूदान-यज्ञ' और 'साम्ययोग' के ग्राहक उसी समय बनते थे। ऐसे लोग, जो समझने से घबराने वाले किस्म के होते हैं, उनसे आत्मीयता और गहराई से उसी समय चर्चा होती थी।

इस तरह काम करते-करते आगे बढ़े। माधान में शिविर करना था। कई कारणों से हमने शिविर को एक नया स्वरूप देने की कोशिश की। अभी तक हम शिविरों के लिए संस्थाओं, व्यवस्थापकों और पैसों पर निर्भर रहते रहे, किन्तु मौका ऐसा आया कि उन सबका सवाल ही नहीं रहा। दो बातें थीं: स्थान और भोजन। लोक-सेवक को इन दोनों की चिन्ता से भी मुक्त होना चाहिए। भारतीय संस्कृति कितनी समृद्ध है! स्थान की व्यवस्था हर गाँव में रहती ही है। ऐसा लगता है, जैसे पुराने लोगों ने मन्दिर और कुँओं के चबूतरे भूदान-सेवकों के लिए ही बनवाये थे। शायद लोगों ने अमराइयाँ भी हमारे लिए ही लगायी थीं। चालीस-पचास नहीं, हजार लोग भी इन सुन्दर काननों में ठहर सकते हैं और खाने का प्रश्न तो बुद्ध भगवान् ने हल ही कर रखा है: एक हाथ में भिक्षा-पात्र और दूसरे में दीक्षा-दान की मुद्रा, यह चित्र हमेशा दिल को ऊँचा उठाता रहा है।

साथियों के मन में कुछ दिन तक संकोच रहा, किन्तु बाद में इससे दिल में जो करुणा का उदय हुआ, उससे सब प्रेरित हो गये। माधान में मारुति का मंदिर और भिक्षा-पात्र, दोनों की बदौलत शिविर अत्यन्त लाभप्रद और सहज हो गया। हमें तो लगता है कि बतौर सिद्धांत के हमें यह पद्धति हमेशा के लिए अपना लेनी चाहिए। अब तो ऐसे सैकड़ों शिविर करने होंगे। कहाँ से आयेंगे इतने मददगार 'पेट्रन' और कहाँ से आयेगा इतना पैसा? और फिर उनके पीछे जो व्यवस्था होती है, वह तो परेशान कर देती है। हमने इन पद्धति में तो एक ऐसा दर्शन पाया कि कभी भी, कहीं भी शिविर हो सकता है। बस, लोगों को खबर कर दी कि फलाँ स्थान तय हुआ, काफ़ी है। माधान-शिविर के बाद टोलियाँ पहले की तरह बनती थीं, किन्तु एक स्थान पर मिलती थीं—तीन दिन के बाद। सेवकों की तैयारी काफ़ी हो चुकी थी। हमें कुछ आत्मविश्वास भी आ गया। धीरे-धीरे कार्यकर्ता तैयार हो गये।

अपने विचार-प्रचार में मुख्य जोर: (१) ग्रामराज के लिए ग्रामदान की ज़रूरत, (२) ग्राम-संकल्प, (३) लोक-सेवकों की ज़रूरत, हर गाँव के लिए स्थानिक सेवक और बाहर निकलने वाले समय-दानी निकालना और (४) साहित्य-प्रचार, इन बातों पर दिया।

विद्यार्थी नोट लेते थे और दो-दो, चार-चार मिनिट के व्याख्यान भी दिया करते थे। धीरे-धीरे उनके विचार भी स्पष्ट हुए। विचार की तैयारी के लिए चंद बातें नियमित तौर पर की गयीं: रोज सुबह प्रार्थना के बाद वाचन होता था। व्याख्यान आदि पर भी चर्चा करते थे। यह खुली चर्चा बड़ी लाभदायक होती है। तीसरी चीज थी, अध्ययन-बैठकें। अक्सर बीच-बीच में विशेष समस्याएँ या विचार आ जाते हैं, जिन पर विस्तार से अध्ययन के रूप में चर्चा होना जरूरी होता है।

एक गाँव का अनुभव उल्लेखनीय है। शाम को पहुँचे। अगले दिन होली थी। यह त्योहार गोंड लोगों का सबसे प्रमुख त्योहार है। शराब चलती है और ढोल बजाना, नाचना तथा गन्दे-गन्दे हाव-भाव करते रहना चलता है। शाम को सबको सभा के लिए बुलाया। काफी लोग आ गये। प्रार्थना शुरू हुई। तभी एक लड़का बहुत गड़बड़ करने लगा। प्रार्थना के बाद सभी गड़बड़ करने लगे। करीब-करीब सभी पिये हुए थे। हमारे सामने सवाल था कि सभा तोड़ दें या चलायें। हम सभी बड़े परेशान-से हो गये थे, कुछ घबरा भी गये थे। पिये हुए हैं, तो सभा की बातें क्या समझेंगे? दूसरा विचार यह था कि अगर इनमें ५ भी ठीक हैं, तो हम क्यों पीछे हटें? परिस्थिति का सामना करना है, यह दिल में तूफ़ान की तरह चला। आखिर समझाना शुरू किया। उस लड़के को प्रेम से समझा कर अपना बना कर बैठाये रखने की कोशिश की। २० मिनिट सभा चली। दो-चार लोग विचार समझे। सबने एक बात समझी कि वे सचमुच गिरे हुए हैं। अगर हम सभा में दूसरा ढंग चलाते तो, हो सकता कि दूसरे लोग इस लड़के को मार ही देते! इस तरह चर्चा में विद्यार्थियों की चिन्तन-शक्ति को खूब मदद मिलती है। एक खास बात, जिस पर हमने आग्रह रखा, वह थी व्यक्तिगत अध्ययन।

हमने तो अनुभव किया कि जैसा सच्चा शिक्षण आज इस कार्यक्षेत्र में सम्भव है, उतना आज की हालत में बैठ कर कहीं भी सम्भव नहीं है। आज की परिस्थिति में शालाएँ उतनी स्फूर्तिदायक हो ही नहीं सकतीं और नयी तालीम का जो ध्येय है यानी सत्याग्रही लोकसेवक तैयार करना, आज उस ध्येय तक पहुँचना, बिना भूदान-ग्रामदान यज्ञ में पड़े, सम्भव ही नहीं है। उत्तर बुनियादी के विद्यार्थियों के साथ यह जो अनुभव मिला, वह हमें तो नयी तालीम का असली दर्शन लगता है। हम तो अपने साथियों से प्रेमाग्रह से कहेंगे कि उत्तर बुनियादी चलाना हो, तो समय की माँग के अनुसार ही चलाओ!

---

www.vinoba.in

आन्दोलन के बढ़ते चरण

लोकसेवकों से प्राप्त सम्मेलन-पूर्व विवरण

बम्बई-विदर्भ : श्री नामदेव जवरे, बुलढाणा (फरवरी-मार्च) पदयात्राओं द्वारा प्रचार, साहित्य-बिक्री तथा अन्य भूदान-कार्य आंशिक रूप से हुए।

श्री श्यामसुंदर शुक्ल, यवतमाल (१६ से ३१ मार्च) तहसील-कार्यकर्ताओं का शिविर हुआ। श्री शांताताई नारुळकर द्वारा भूदान का परिचयात्मक प्रचार।

राजस्थान : श्री गिरधारीलाल खत्री, बाड़मेर (१ फरवरी से १५ अप्रैल) सर्वोदय-मेले के अवसर पर सूतांजलि प्राप्त की गयी, जनसम्पर्क, विशेषतः शिक्षकों व विद्यार्थियों से। साहित्य-बिक्री हुई। पत्रिकाओं के ग्राहक बनाये गये।

श्री मणिकलाल विद्यार्थी, डूंगरपुर (मार्च) बांसवाडा तथा डूँगरपुर के कार्यकर्ताओं ने मिल कर पदयात्राएँ कीं। 'भूदान-यज्ञ' तथा 'ग्रामराज' के ग्राहक बनाये गये। साहित्य-बिक्री हुई। यंत्रोद्योग की हानियाँ बतला कर ग्रामोद्योग के प्रतिज्ञा-पत्र भरवाये। बालसभाओं का आयोजन किया। दैनिक स्वाध्याय और कताई के कार्यक्रम हुए। प्रभात फेरी और सफाई का कार्य हुआ।

श्री मुरलीधर चतुर्वेदी, टोंक (१ जनवरी से ३१ मार्च तक) स्थान-स्थान पर सभाएँ की गयीं। ता० १६ जनवरी से ३१ जनवरी तक पूर्वतैयारी तथा १२ फरवरी तक पदयात्राएँ हुईं। साहित्य-बिक्री हुई और पत्र-पत्रिकाओं के ग्राहक बनाये गये।

श्री नारायण उपाध्याय, बांसवाडा (माह फरवरी) वेणेश्वर धाम पर लगने वाले सर्वोदय-मेले तक पदयात्राएँ हुईं। वेणेश्वर धाम में कार्यकताओं का सम्मेलन।

श्री भवानी भाई, झुंझुनू (१५ मार्च से ३१ मार्च तक) पदयात्रा हुई, पिलानी के छात्रों में प्रचार हुआ। साहित्य-बिक्री हुई। पत्रों के ग्राहक बनाये गये।

श्री सेवारामजी, अलवर (१ जनवरी से ३१ मार्च तक) सन सत्तावन् का प्रथम दिवस मनाया गया। १८ व्यक्तियों ने १२ गुण्डी प्रति व्यक्ति वार्षिक सूत्रदान देना स्वीकार किया। स्थान-स्थान पर अ० भा० भूदान-टोली की पूर्वतैयारी की गयी। इसके द्वारा भूदान कार्य में सफलता प्राप्त हुई। श्री गोकुलभाई भट्ट ने राजस्थान सरकार की ओर से घोषणा की कि 'अजरका' क्षेत्र में भूदान के तरीके से दो लाख एकड़ सरकारी जमीन का वितरण होगा। सपरिवार पदयात्रा ३० जनवरी से। इस माध्यम से गाँव-गाँव में भूदान-संदेश दिया गया। भूदान, सम्पत्तिदान, साहित्य-बिक्री आदि कार्य हुए।

श्री सुन्दरलाल आजाद, चितौड़गढ़ (१ जनवरी से १५ मार्च तक) इस जिले की सभी तहसीलों में पदयात्रा द्वारा भूदान-संदेश पहुँचाया गया। २७५ मीलों की पदयात्रा हुई। इस प्रकार निष्ठावान् कार्यकर्ता प्राप्त कर उनका शिविर चितौड़गढ़ में हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम जन-आधारित हुआ। यह जिला भू-क्रांति के दृष्टिकोण से पिछड़ा हुआ है।

उत्तर प्रदेश : श्री राजनारायण त्रिपाठी, उन्नाव : १ अप्रैल से १५ अप्रैल तक २१ गाँवों में घूम कर ६१ मील की पदयात्रा की। सर्वोदय-साहित्य बिका, भूमि प्राप्त हुई और २१ भाई-बहनों ने आंशिक समय-दान दिया। साहित्य-बिक्री की और बाँस-चरखे का विद्यार्थियों और शिक्षकों में प्रचार किया।

डा० रामकृष्ण वर्मा, फर्रूखाबाद : १ अप्रैल से १५ अप्रैल तक विचार-प्रचार व वितरण-कार्य किया। १६ अप्रैल से ३० अप्रैल तक 'भूक्रांति-दिवस' मनाया व 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक का प्रचार किया।

श्री रघुराज सिंह, हरिश्चंद्र उपाध्याय, बहराइच : १ अप्रैल से १५ अप्रैल तक भूमि प्राप्त हुई। साहित्य-बिक्री की।

श्री सुरेशराम भाई, इलाहाबाद : दो मास के प्रयास से ६७० बीघे का भूदान मिला और ११२ दाताओं ने ६०० के वार्षिक सम्पत्तिदान का वचन दिया। 'भूदान-यज्ञ' के ४१ ग्राहक बने और १००) का साहित्य बिका। १८ अप्रैल का 'भू-क्रांति' दिवस मनाया गया और मई, जून की छुट्टियों में ३७७३ विद्यार्थियों का समयदान प्राप्त हुआ।

श्री रामलाल, गोंडा : अप्रैल माह में १८ गाँवों में पदयात्रा की, १९ दानपत्रों द्वारा १ मन ६ सेर अन्नदान प्राप्त हुआ। साधन-दान मिला। एक किसान ने अपने ग्राम में ग्रामदान हो, इसलिए अपनी सब भूमि भूदान में दे दी।

श्री शिवनाथ सिंह त्यागी, मुजफ्फरनगर : भूदान-साहित्य बेचा व अम्बर-चरखे का ज्ञान कराया।

श्री श्रीनारायण वाजपेयी, बाराबंकी : जनवरी से अभी तक का इकट्ठा विवरण भेजा : २३९ एकड़ भूमि, ३१०२) का सम्पत्तिदान, १२) साधनदान, २३७॥S अन्न प्राप्त हुआ। "भूदान-यज्ञ" के ९१ ग्राहक बनाये और ५७५)की साहित्य-बिक्री की।

श्री बाबूराम ब्रह्मचारी, सीतापुर : ५१ मील पदयात्रा द्वारा ग्रामदान प्रचार।

श्री राजभूषण सिंह, कोरियों, इलाहाबाद : २ दाताओं द्वारा भूदान प्राप्त हुआ, १३०) का संपत्तिदान व एक हल साधनदान में प्राप्त हुआ। ४ सेर अन्नदान मिला और साहित्य-बिक्री हुई।

श्री सरजू भाई, बनारस : 'भूदान-यज्ञ' के ग्राहक बनाये और साहित्य-बिक्री की।

श्री शिवमूर्ति भाई, रतनपुर, जौनपुर : जनवरी, फरवरी, मार्च के काम का इकट्ठा विवरण। श्रमदान के कार्य के अतिरिक्त १५६ 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक की फुटकर बिक्री के साथ ६ वार्षिक ग्राहक बनाये गये। भूमि प्राप्त हुई।

श्री शिवदास त्रिपाठी, देवरिया : शिविरों के आयोजन किये। भूमि का वितरण किया गया।

श्री शिवनारायण, मथुरा : ११ एकड़ भूमि प्राप्त हुई, १७ एकड़ १६ डिसिमल भूमि वितरित की गयी। ६१) संपत्तिदान, ५) अन्नदान, २ बैल और एक घर साधन-दान में प्राप्त हुए। एक ग्राम में भूमिहीनता समाप्त कर ग्रामदान का वातावरण बना।

श्री लक्ष्मण सिंह पुण्डीर, एटा : १३ अप्रैल से १३ मई तक ५ टोलियों ने १३० ग्रामों में विचार-प्रचार किया। १० बीघा भूमि प्राप्त हुई। २ सज्जनों ने समय-दान का यचन दिया। ३८ एकड़ भूमि वितरित की। २०) की साहित्य की बिक्री।

श्री बलवंत सिंह भारतीय, गढ़वाल : विचार-प्रचार किया।

श्री कामेश्वर प्रसाद बहुगुणा, टिहरीगढ़वाल : २१ मई से २४ मई तक शिविर चलाया।

श्री लक्ष्मणप्रसाद कोठारी, सीतापुर—२. ६४ एकड़ भूमि वितरित की गयी। संपत्तिदान प्राप्त हुआ।

मध्य प्रदेश : श्री बड़समुद्रकरजी, छिंदवाड़ा : भूदान-पत्र के ७ ग्राहक बनाये। बाबा राघवदास की पदयात्रा की पूर्व तैयारी की। आंशिक समयदानी बनाये।

श्री महिपाल सिंह नाकतोड़े, बालाघाट : ५० ग्रामों में १३७ परिवारों में ४१९ एकड़ भूमि का वितरण हुआ। ९ ग्रामों में १० दाताओं द्वारा करीब २७ एकड़ भूमि प्राप्त हुई। ११ टोलियों में करीब २५ साथियों द्वारा वितरण-प्रचार किया गया। ४०) की साहित्य-बिक्री हुई।

श्रीमती रज्जूदेवी, छड़ीमली, रायगढ़ : 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक का प्रचार, प्रसार और स्त्री-शिक्षा का कार्य किया।

श्री पंथराम, दुर्ग : २० मार्च से २० अप्रैल तक ५८ गाँवों में घूम कर सामूहिक पदयात्रा व पदयात्रा की पूर्व तैयारी की। कुल ९०० एकड़ भूमि प्राप्त हुई। ७९) वार्षिक का संपत्तिदान मिला। साहित्य-बिक्री की।

श्री ईश्वरदास, दुर्ग : एक मास की पदयात्रा में १०४ दाताओं द्वारा करीब १०३ एकड़ भूमि प्राप्त हुई।

बिहार का ता० १८ अप्रैल का भू-वितरण

गत १८ अप्रैल '५७ को भू-क्रांति-दिवस के अवसर पर बिहार के ३,२२८ गाँवों में २६,९३३ भूमिहीन परिवारों के बीच ४३,६६० एकड़ ५२ डि० भूदान की जमीन बाँटी गयी। कुल वितरित भूमि में से करीब ३३३२ एकड़ का विवरण दाताओं से प्राप्त नहीं हो सका। फिर भी उनका वितरण गाँव वालों की सम्मति से ४१०४ परिवारों के बीच कर दिया गया। वितरण के पूर्व जमीन की पैमाइश के सिलसिले में ९३७ गाँवों की ८३५८८ एकड़ २६ डि० भूमि वितरण के अयोग्य साबित हुई।

गत १८ अप्रैल के कार्यक्रमों में भूमिवितरण का कार्यक्रम मुख्य था। इसके अलावा साहित्य-बिक्री, भूदान-प्राप्ति तथा कार्यकर्ता-प्राप्ति के कार्यक्रम भी थे। तदनुसार करीब २८२९ रुपये का सर्वोदय-साहित्य बेचा गया और ४१९ गाँवों के ३१४ दाताओं से करीब २२६ एकड़ भूमि तथा ५५५ नये कार्यकर्ता प्राप्त हुए।

बिहार-सर्वोदय-मंडल, पटना–३ —कार्यालय मन्त्री

---

www.vinoba.in

लाइसन्स नं. ए. ३४ रजिस्टर्ड नंबर ए. ३५४
(पहले से डाक-महसूल दिये बिना भेजने का परवाना प्राप्त)

केरल की क्रांतियात्रा से–

(महादेवी)

श्री शांतिदास भाई फ्रांस के एक त्यागी सेवक, कवि और चित्रकार सज्जन हैं। वे गांधीजी के आश्रम में भी रह चुके हैं। भूदान के सिलसिले में गया जिले में दो महीने बाबा के साथ थे। फ्रांस में पेरिस के पास उनका गांधी-विचार धारा का एक आश्रम भी है। फ्रांस जाने के बाद विनोबा और भूदान के बारे में एक किताब उन्होंने लिखी है और वह काफी जनप्रिय भी हो गयी है। अभी उस किताब का अंग्रेजी अनुवाद भी निकला है–"Gandhi to Vinoba" के नाम से।

आजकल अलजीरिया के साथ फ्रांस की जो कशमकश चल रही है, उस बारे में शांतिदास ने उपवास किया था। उन्होंने बाबा को निम्नलिखित पत्र भेजा था :

"परमप्रिय बाबाजी,

अलजीरिया के युद्ध में फ्रान्स की कीर्ति को कलंकित करने वाले जो अत्याचार हुए, उनके कारण दो साथियों के सहित हम पैरिस में सत्याग्रह कर रहे हैं। कुछ लोकाभिमुख आंदोलनकारी संस्थाएँ हमारे साथ हैं और हमें आशा है कि हम ऐसे अत्याचारों का तथा उस युद्ध का ही बिलकुल अंत कर सकेंगे। बीस दिन के संकल्पित उपवास का यह आठवाँ दिन है। बाबाजी, आप हमें अपनी आशीश भेजिये।

—शांतिदास (लेनियाडेल वास्टो)"

इसके उत्तर में विनोबा का तार :

"शांतिदास, आपका पत्र मिला। आपके उपोषणात्मक सत्याग्रह में भगवान् की कृपा आप पर रहे। आशा है, यह उपवास हृदयों को द्रवित करने में सहायक हो। मेरा स्नेह। —विनोबा"

× × ×

१९४२ में पू. विनोबाजी वेलूर-कारागृह में १५ महीने थे। इस बीच अपने स्वभाव के मुताबिक उस-उस प्रदेश के लोगों के हृदय में प्रवेश करने की दृष्टि से स्थानीय भाषा का अभ्यास वे करते रहे हैं। इस जेल में भी उन्होंने तमिल भाषा का अभ्यास शुरू किया था। उस कारण वहाँ के लोगों से काफी एकात्मता का अनुभव वे कर रहे थे। बाबा को तमिल पढ़ाने वाले एक अच्छे विद्वान गुरु यज्ञेश्वर शर्मा मिले थे।

तमिलनाड़-यात्रा के समय बाबा ने कई बार उनकी याद की। वे वृद्ध थे, तो लोगों ने अंदाज से कह दिया कि उनका स्वर्गवास हो गया होगा! यात्रा का पड़ाव उनके गाँव के नजदीक था, तो बाबा फिर से कहने लगे कि "ठीक जाँच करो।" पर अचानक उस दिन दोपहर यज्ञेश्वर शर्मा ही बाबा से मिलने आये। बाबा ने उनका प्रत्युत्थान कर स्वागत किया। हाथ पकड कर उन्हें अपने पास बिठाया। क्षेम-कुशल पूछा। भोजन, उम्र आदि के बारीक-बारीक प्रश्न भी पूछे। घर में अकेले हैं। बाबा ने पूछा, कौन खाना पकाता है? उत्तर मिला, "खाना होटल से आता है। एक लड़की है। वह पागल है।" गीताबोध का उन्होंने तर्जुमा किया था। वह छपा नहीं है। सुनने की जिज्ञासा लोगों में कम है, ऐसा उन्होंने कहा। कोई विद्यार्थी आ जाय, तो बोल लेते हैं। बाबा ने कहा, "जहाँ ज्ञानी रहता है, वहाँ जिज्ञासा नहीं है! जो मुफ्त ज्ञान मिलता है, उसका कोई महत्त्व आजकल नहीं है। स्कूल-कॉलेजों में पैसा खर्च करके जो विद्या हासिल की जाती है, उसीकी कीमत की जाती है!" फिर बैठे हुए लोगों से कहा, "तुम्हारे सामने एक वृद्ध विद्वान है। उसके पास जाओ। उसकी शुश्रूषा करो और ज्ञान-प्राप्ति करो। इससे तुम लोगों को सेवा और ज्ञान मुफ्त में प्राप्त हो जायेगा।" फिर कृतज्ञता दिखाते हुए कहा कि "आपने तमिल सिखायी थी, इस वक्त तमिलनाड-यात्रा में वह बहुत उपयोगी पड़ी है!"

संवाद-सूचनाएँ :

—**खादी-विद्यालय, सर्वोदय-आश्रम, रानीपतरा (पूर्णियां)** में खादी-कार्यकर्ता-प्रशिक्षण का नया सत्र १ जुलाई '५७ से प्रारंभ होगा। एक साल में तुनाई से बुनाई तक की सभी प्रक्रियाएँ एवं अंबर चरखे का ज्ञान दिया जायगा। शिक्षण-प्रवेश चाहने वाले आवेदन-पत्र एवं नियम प्राप्त कर १५ जून तक भर कर भेजें। प्रशिक्षण-काल में भोजन आदि आवश्यक खर्चों के लिए ३० रुपया मासिक छात्रवृत्ति दी जायगी।
सर्वोदय-आश्रम, पो० रानीपतरा, पूर्णिया —हरिकृष्ण ठाकुर, आचार्य

बिहार कस्तूरबा राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट में ग्रामसेविका-प्रशिक्षण का नया सत्र १५ जून से प्रारंभ होगा। भूदान-क्रांति में लगे कार्यकर्ताओं के परिवारों की बहनों के प्रशिक्षण का प्रबंध खास तौर से रहेगा। ३ साल से ७ साल तक के बच्चों के लिए बालवाडी की व्यवस्था है। बच्चों का केवल भोजन खर्च, करीब १५) अभिभावकों को देना होगा। आवेदन-पत्र आवेदिकाएँ अपने हाथ से लिखकर नीचे के पते पर तुरंत भेज दें। —सुशीला अग्रवाल, प्रतिनिधि
कस्तूरबा ग्रामसेविका विद्यालय, पो० बैनी, जि० दरभंगा

—सर्वोदय-आश्रम, रानीपतरा (पूर्णियाँ) में ता० २३ जून से समयदानी छात्रों का शिविर होने वाला था, लेकिन अब वह पूर्णियाँ और सहर्षा में होने वाले श्री जयप्रकाशजी के २० जुलाई के दौरे के बाद होगा। अतः रानीपतरा के शिविर में भाग लेने वाले छात्र अब कृपया पूसा रोड (दरभंगा) में १५ जून से होने वाले शिविर में भाग लें। उत्तर बिहार में अब केवल दो ही शिविर होने वाले हैं: १५ जून से पूसा रोड और १९ जून से मिर्जानगर (मुजफ्फरपुर)। सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, धीरेन्द्र मजूमदार तथा अच्युतराव पटवर्धन उक्त शिविर में आयेंगे।
बिहार सर्वोदय-मंडल, पटना ३ —कार्यालय मंत्री,

—**महात्मा भगवानदीनजी** आजकल सर्व-सेवा-संघ, प्रकाशन-विभाग काशी में आये हुए हैं और श्री जमनालाल जैन के यहाँ ठहरे हुए हैं। करीब एक माह वे रहेंगे।

—**विनोबाजी का पता :** मार्फत सर्व-सेवा-संघ, गांधीनगर, तिरुपुर (जि०कोइंबतूर)

प्रकाशन-समाचार

आज का धर्म : महात्मा भगवानदीन पृष्ठ १०४, मूल्य ॥)

जिन्होंने 'जवानो' पढ़ा है, वे महात्माजी की विचार-शक्ति से परिचित हैं। उसी सशक्त लेखनी से समाज-विषयक जीवन में स्फूर्ति लाने वाले विचार 'आज का धर्म' में आप पायेंगे। महात्माजी की भाषा तो विचारों की बोलती हुई तस्वीर ही है।

भूदान-गंगा : चतुर्थ व पंचम खण्ड : विनोबा : पृष्ठ ३४४ व ३३८ मूल्य १॥) १॥)

भूदान-गंगा के तीन खण्ड पहले प्रकाशित हो चुके हैं। अब चतुर्थ खण्ड में १ अक्टूबर ५५ से ४ जून ५६ तक और पंचम खण्ड ५ जून ५६ से ३१ अक्टूबर ५६ तक महत्त्वपूर्ण प्रवचनों का संकलन पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। पहले तीन खण्डों की भांति इनके भी व्यापक स्वागत की आशा है।

जीवन-परिवर्तन : डा० ओमप्रकाश पृष्ठ ६०, मूल्य ।)

'भूखे को ज़मीन दो, जेल नहीं'–विनोबा की यह वाणी एक डाकू के जीवन-परिवर्तन पर ढाल कर इस छोटे-से नाटक की रचना की गयी है। आश्रमवासियों की अहिंसा और करुणा के प्रयोग से वह कैसे सच्चा श्रमिक बन कर अपनी गृहस्थी सम्हाल लेता है—यही नाटक की कथावस्तु है। नाटक अभिनीत भी हो चुका है।

—अ० भा० सर्व सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

विषय-सूची

१. ग्रामदान के गर्भ से नागरिक-क्रांति	दादा धर्माधिकारी	१
२. मनुष्य पूरा और धनी कब बनता है?	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	२
३. कम्युनिज़म और सर्वोदय!	विनोबा	३
४. जापान के लिए संदेश	,,	३
५. आल्वारों और आचार्यों की सर्वोदय-दृष्टि	श्रीनिवास अयंगार	४
६. कानून बनाम समाज-परिवर्तन	विनोबा	५
७. धरती के बेटे जाग उठे हैं!	प्रभु मङ्गल	५
८. स्टेट् अहिंसा की राह पर कैसे जाये?	विनोबा	६
९. सर्वोदय की दृष्टि :		
१. 'मेहनत इंसान की, दौलत भगवान् की'	दादा धर्माधिकारी	६
२. जनतंत्र बनाम अखबार	सिद्धराज	७
१०. उत्तर-मध्यप्रदेश से—	विनोबा	८
११. 'एक दिन में क्रांति' का अर्थ	,,	८
१२. एक खतरा!	,,	९
१३. सर्वोदय-संमेलन के लिए प्राप्त चंद संदेश	—	९
१४. उत्तर बुनियादी विद्यार्थियों के लिए जीवित शिक्षा	देवीप्रसाद	१०
१५. भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण	—	११
१६. केरल की क्रांतियात्रा से—	महादेवी	१२
१७. सूचनाएँ, प्रकाशन-समाचार आदि	—	१२

सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव, भूषण, प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, काशी, टे० नं० १२८५

www.vinoba.in